QUESTION BANK (SECOND TERMINAL)

STD-IX

SUBJECT : HINDI

व्याकरण (SECTION – A)

निबंध लेखन

किसी भी तरह की पठित सामग्री भाव या विचार को सुनियोजित ढंग से अपनी भाषा में प्रस्तुत करना ही निबंध है।

निबंध के प्रारूप को तीन भागों में बांटा जा सकता है।

१. **प्रारंभ –** निबंध का प्रारंभ आकर्षक एवं विषय को स्पष्ट करने वाला होना चाहिए जो पाठक का ध्यान आकर्षित कर सके। आरंभ कविता की पंक्तियों, किसी दृष्टांत, विषय से संबंधित किसी महापुरूष के कथन या विषय को स्पष्ट करने वाले वाक्य से होना चाहिए। आरंभ में, कम शब्दों में पाठक को विषय से अवगत कराने की क्षमता होनी चाहिए।

२. **मध्य –** इसका सीधा संबंध निबंध के विषय से होता है। यहं निबंध का सबसे महत्वपूर्ण भाग होता है। इस भाग में विषय का विस्तृत वर्णन होता है। इस वर्णन में दृष्टांत, विचारकों एवं साहित्यकारों के श्रेष्ठ कथन, किसी कवि की विषयानुकूल कविता की कुछ पंक्तियां, कोई शिक्षाप्रद सूत्र या श्लोक की पंक्ति, रामचरितमानस की चौपाइयां आदि सम्मिलित की जा सकती हैं। इसमें मुख्य विषय का विस्तार होने के साथ-साथ विचार या बात का क्रमबद्ध एवं तर्कसंगत वर्णन होना चाहिए।

३. **अन्त –** निबंध का अंत संक्षिप्त, प्रभावशाली एवं सारगर्भित होना चाहिए। संपूर्ण निबंध के संबंध में लेखक का दृष्टिकोण अंत के कुछ वाक्यों में स्पष्ट होना चाहिए। निबंध का अंत संपूर्ण निबंध की सफलता का आधार है।

परीक्षा उपयोगी निबंध लेखन के कुछ विषय :

१. हमारी धरती और बढ़ रहा ग्लोबल वार्मिंग

२. कंप्यूटर एवं मोबाइल फोन, आज की आवश्यकता

३. आधुनिक युग में कम हो रहे पुराने संस्कार

४. बढ़ती गर्मी की वजह से जल संकट - एक विकट समस्या
५. देश में बढ़ता भ्रष्टाचार
६. आलस्य-मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु
७. ''जाको राखे साइयां मार सके ना कोई'' इस उक्ति के आधार पर एक कहानी लिखिए।
८. घायल व्यक्ति को अस्पताल पहुंचाने का अनुभव अपने शब्दों में लिखें।
९. वृक्ष की आत्मकथा लिखें।
१०. चित्र देखकर अपके मन में जो विचार आ रहे हैं उन्हें कहानी के रूप में लिखें।
११. आपके स्कूल की तरफ से की गई ट्रैकिंग यात्रा का वर्णन कीजिए।
१२. क्या ईश्वर है ? विषय के पक्ष या विपक्ष में अपने विचार उदाहरण सहित दीजिए।
१३. रेलवे स्टेशन पर बिताई गई एक रात बताइए कि उस समय आप कहाँ जा रहे थे ? आपके साथ कौन-कौन थे और आपका समय किस प्रकार व्यतीत हुआ ?
१४. मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना - उक्ति के आधार पर एक मौलिक कहानी लिखिए।
१५. प्रात: कालीन भ्रमण से क्या-क्या लाभ हैं ? क्या आप प्रात: भ्रमण के लिए जाते हैं ? बताइए कि प्रात: काल का दृश्य कैसा होता है ?
१६. कल्पना कीजिए कि आप कौन बनेगा करोड़पति में ₹ 50000000 जीत गए हैं। उससे आपको कोई तीन कार्य करने हैं। आप कौन कौन से कार्य करेंगे जिससे आप को अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो सके।

पत्र लेखन (अनौपचारिक)

१. **आपकी छोटी बहन पहली बार घर से दूर पाश्चात्य संगीत की शिक्षा के लिए विदेश जा रही है। वह परेशान और दुखी है। उसे समझाते हुए प्रोत्साहित कीजिए।**

छात्रावास
दयालबाग शिक्षण संस्थान।
दिनांक १२.७.२०१९

प्रिय पिंकी,

सस्नेह आशीर्वाद।

तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम तुम्हें बहुत-बहुत बधाई, तुम्हें विदेश जाने का अवसर प्राप्त हुआ है। तुम्हें परेशान या दु:खी होने की आवश्यकता नहीं है। तुम्हें तो खुश होना चाहिए कि, तुम अपने लक्ष्य के पथ पर आगे बढ़ रही हो। केवल २ वर्ष के लिए ही तो परिवार से दूर जा रही हो। कुछ बनने के लिए थोड़ा त्याग तो करना ही पड़ता है। मुझे भी पढ़ाई पूरी कर कुछ बनने के लिए छात्रावास में रहना पड़ रहा है। हमें अपने मां-बाप का नाम रोशन करने के लिए कुछ दिन का उनसे अलगाव सहना ही पड़ेगा। तुम खुशी-खुशी जाओ और अपनी शिक्षा पूर्ण कर नाम कमाओ तथा हम सबका नाम रोशन करो। हम सबकी खुशी इसी में है कि तुम अपने लक्ष्य तक पहुँचो। माताजी व विताजी को मेरा चरण-स्पर्श कहना।

तुम्हारा अग्रज,

अजय

(ख) **आपकी बैंक पासबुक खो गई है। आप इण्डियन जारी बैंक के मैनेजर को आवेदन-पत्र लिखकर पासबुक की दूसरी प्रति जारी करवाने का अनुरोध करें।**

सेवा में,
बैंक मैनेजर,
इण्डियन बैंक,
आगरा।

विषय – दूसरी पास बुक जारी करने हेतु पत्र।

महोदय,

विनम्र निवेदन है कि आपके बैंक में पिछले दस सालों से मेरा खाता है। मेरा खाता क्रमांक ०१२३४५ है। मेरी पासबुक खो गई है।
आपसे अनुरोध है कि मेरी पासबुक की दूसरी प्रति जारी करने का कष्ट करें।
धन्यवाद,

भवदीय

तरुण कुमार

१५, सरिताविहार, नई दिल्ली।

दिनांक : ३०.०४.२०१९

अपठित गद्यांश

१. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखें।

अपने आपको हर घड़ी और हर पल महान बनाने का नाम वीरता है। वीरता के कारनामे तो एक गौण बात है। असल वीर तो इन कारनामों को अपनी दिनचर्या में लिखते भी नहीं। दरख्त तो जमीन से रस ग्रहण करने में लगा रहता है। उसे यह ख्याल ही नहीं होता कि मुझमें कितने फल या फूल लगेंगे और कब लगेंगे ? उसका काम तो अपने आप को सत्य में रखना है; सत्य को अपने अंदर फूट फूट कर भरना है और अंदर बढ़ना है। उसे इस चिंता से क्या मतलब कि कौन मेरे फल खाएगा या मैंने कितने फल लोगों को दिए ?

वीरता का विकास नाना प्रकार से होता है। कभी तो उसका विकास लड़ने मरने में, खून बहाने में तलवार-तोप के सामने जान गंवाने में होता है। कभी प्रेम के मैदान में उनका झंडा गड़ा होता है। कभी साहित्य और संगीत से वीरता खिलती है। कभी जीवन के गूढ़ तत्व और सत्य की तलाश में बुद्ध जैसे राजा विरक्त होकर वीर हो जाते हैं। कभी किसी आदर्श पर और कभी किसी पर वीरता फहराती-लहराती है। जब कभी इसका विकास हुआ तभी एक नया कमाल नजर आया, एक नया जमाल पैदा हुआ, एक नई रौनक, एक नया रंग, एक नई बहार, एक नई प्रभुता संसार में छा गई। वीरता हमेशा निराली और नई होती है। नयापन भी वीरता का एक खास रंग है। वीरता की कमी नकल नहीं हो सकती। जैसे मन की प्रसन्नता कभी कोई उधार नहीं ले सकता। वीरता देश-काल के अनुसार संसार में जब कभी प्रकट हुई, तभी एक नया स्वरूप लेकर आई, जिसके दर्शन करते ही सब लोग चकित हो गए, कुछ बन न पड़ा और वीरता के आगे सिर झुका दिया।

(i) वीरता किसे कहते हैं ?

उ– अपने आप को हर समय महान बनाने का नाम ही वीरता है। जो व्यक्ति महान कार्य करते हैं, वे वीर होते हैं।

(ii) वीर लोग अपने कारनामों को क्यों नहीं लिखते ?

उ– जिस प्रकार एक वृक्ष पृथ्वी से जल ग्रहण करता रहता है और यह नहीं देखता कि उस पर कितने फल या फूल लगेंगे, उसी प्रकार वीर लोग भी होते हैं जो फल की चिंता ना कर के कर्म में ही लगे रहते हैं।

(iii) वीरता का विकास किस प्रकार होता है ?

उ– वीरता का विकास अनेक प्रकार से होता है। जैसे लड़ने-मरने में, खून बहाने में, तलवार तोप के सामने प्राण देने में, प्रेम के मैदान में, साहित्य और संगीत में, जीवन के गूढ़ तत्व और सत्य की खोज में आदि।

(iv) वीरता के विकास का क्या परिणाम होता है ?

उ– वीरता के विकास में अनोखे कार्य होते हैं और एक अपूर्व सौंदर्य पैदा होता है। नया रंग, बहार व प्रभुता संसार में छा जाती है। वीरता सदैव निराली व नई होती है।

(v) लेखक के अनुसार वीरता के क्या लक्षण हैं ?

उ– वीरता की कभी नकल नहीं हो सकती, जैसे मन की प्रसन्नता कभी कोई उधार नहीं ले सकता। वीरता सदैव एक नए रूप में प्रकट होती है। वीरता के दर्शन करते ही सब लोग आश्चर्य में पड़ जाते हैं और उसके सामने सिर झुका देते हैं।

व्यवहारिक हिंदी व्याकरण

सूचना अनुसार शब्द बदलें अथवा वाक्य में परिवर्तन करें।

(i) निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाएं।

आदमी	आदमियत	इंसान	इंसानियत
अतिथि	आतिथ्य	ईश्वर	ऐश्वर्य
चोर	चोरी	मनुष्य	मनुष्यता
दास	दासता	कृषक	कृषि
बुढ़ा	बुढ़ापा	कारीगर	कारीगरी
प्रतिनिधि	प्रतिनिधित्व	सज्जन	सज्जनता
वानर	वानरत्व	पशु	पशुता
पंडित	पांडित्य	व्यक्ति	व्यक्तित्व
सुजन	सौजन्य	राष्ट्र	राष्ट्रीयता
मित्र	मित्रता	शत्रु	शत्रुता

सेवक	सेवा	साधु	साधुत्व
लड़का	लड़कपन	वीर	वीरता
भाई	भाईचारा	सिंह	सिंहत्व
प्रभु	प्रभुत्व	देव	देवत्व
नारी	नारीत्व	पुरुष	पुरुषत्व
बालक	बालकपन	बच्चा	बचपन
चिकित्सक	चिकित्सा	स्वामी	स्वामित्व

(ii) निम्नलिखित शब्दों के विलोम रूप लिखिए।

अनुज	अग्रज	अनाथ	सनाथ
अंधकार	प्रकाश	अनुराग	विराग
अभिमान	नम्रता	अपेक्षा	उपेक्षा
अमावस्या	पूर्णमासी	अल्पायु	दीर्घायु
आधुनिक	प्राचीन	आग्रह	दुराग्रह
आदान	प्रदान	आदर्श	यथार्थ
अपराधी	निरपराधी	आगामी	विगत
आलस्य	स्फूर्ति	आकाश	पाताल
इच्छा	अनिच्छा	इहलोक	परलोक
उग्र	शांत	उदार	संकीर्ण
उत्तम	अनुत्तम	उदात्त	अनुदात्त
उत्कृष्ट	निकृष्ट	उच्च	निम्न
उन्नति	अवनति,	उत्तरायण	दक्षिणायन
उद्धत	विनीत	उपयुक्त	अनुपयुक्त
इष्ट	अनिष्ट	उपसर्ग	प्रत्यय
एकत्र	विकीर्ण	एड़ी	चोटी
ऐच्छिक	अनिवार्य		

(iii) निम्नलिखित शब्दों के दो दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

अनिल	हवा, वायु, पवन	अमृत	सुधा, सोम, पियूष
अग्नि	धावक, आग, अनल	अश्व	घोड़ा, हय, घोटक
असुर	दानव, राक्षस, दैत्य	अध्यापक	गुरु, शिक्षक, आचार्य

अंधकार	तम, तिमिर, अंधेरा	अनुपम	अपूर्व, अतुल, अनोखा
अतिथि	मेहमान, आगंतुक, अभ्यागत	अरण्य	वन, जंगल, विपिन
अहंकार	अभिमान, घमंड, गर्व	आभूषण	गहना, अलंकार, भूषण

(iv) निम्नलिखित अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखें।

जो कहा ना जा सके	अकथनीय
जिसके पास कुछ भी ना हो	अकिंचन
जिसका वर्णन न किया जा सके	अवर्णनीय
जो मांस खाता हो	मांसाहारी
जिसे शर्म ना आती हो	निर्लज्ज
ग्रहण करने योग्य	ग्राह्य
पूजन करने योग्य	पूजनीय
जो प्रेम का पात्र हो	प्रिय
जो दूसरों की भलाई करता हो	परोपकारी
शरण में आया हुआ	शरणागत

(v) निम्नलिखित शब्दों के विशेषण रूप लिखिए।

धर्म	धार्मिक	अर्थ	आर्थिक
समाज	सामाजिक	परिवार	पारिवारिक
नीति	नैतिक	राजनीति	राजनैतिक
इदिहास	ऐतिहासिक	दिन	दैनिक
अंक	अंकित	निंदा	निंदित
जंगल	जंगली	शहर	शहरी
पूजा	पूजनीय	ईष्या	ईर्ष्यालु
विधि	विधिपूर्वक	दुकान	दुकानदार
तीन	तीसरा	निंदा	निंदक
पूजा	पूजक	मृत्यु	मृतक
रेत	रेतीला	सेवा	सेवक
भागना	भगोड़ा	घूमना	घुमक्कड़
लूटना	लूटेरा	बाहर	बाहरी
नीचे	निचला	आगे	अगला

ऊपर	ऊपरी	वह	वैसा
यह	ऐसा	हम	हमारा

(vi) निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए।

अचरज	आश्चर्य	आठ	अष्ट	आँख	अक्षि
आग	अग्नि	घर	गृह	जीभ	जिह्वा
दही	दधि	धुआँ	धूम्र	कछुआ	कच्छप
कान	कर्ण	किवाड़	कपाट	कोयल	कोकिल
बूंद	बिंदु	अमी	अमृत	गेहूं	गोधूम

(vii) सूचना अनुसार वाक्य परिवर्तन करें।

(a) वह गन्ना बहुत मीठा है। (मिठास का प्रयोग करें)

उ– उस गन्ने में बहुत मिठास है।

(b) अध्यापक बच्चों को पढ़ाएगा। (वर्तमान काल में बदलिए)

उ– अध्यापक बच्चों को पढ़ाता है।

(c) रोगी सो नहीं पाया। (भाव वाच्य में बदलिए)

उ– रोगी से सोया नहीं गया।

(d) इतनी आयु होने पर भी वह विवाहित नहीं है। (नहीं हटाइए परंतु वाक्य का अर्थ ना बदले)

उ– इतनी आयु होने पर भी वह अविवाहित है।

(e) उसकी पत्नी अपनी सास से नहीं बोलती। (लिंग बदलकर लिखिए)

उ– उसका पति अपने ससुर से नहीं बोलता।

(f) उस लड़की ने आज एक पुस्तक पढ़ी। (वचन बदलिए)

उ– उन लड़कियों ने आज अनेक पुस्तकें पढ़ीं।

(g) मैंने दिल्ली जाना है। (शुद्ध कीजिए)

उ– मुझे दिल्ली जाना है।

(h) ''अंधे की लकड़ी'' मुहावरे को अपने वाक्य में प्रयोग करो।

उ– श्रवण कुमार अपने माता पिता की अंधे की लकड़ी था।

(i) जैसी करनी वैसी भरनी लोकोक्ति के आधार पर एक वाक्य लिखें।

उ– नौकर अपने मालिक के घर से ही चोरी करता पकड़ा गया। मालिक ने उसे घर से बाहर निकाल दिया। सच है जैसी करनी वैसी भरनी।

INSIDE QUESTIONS

साहित्य सागर – संक्षिप्त कहानियाँ

बात अठन्नी की, कहानीकार -सुदर्शन

1. गुनाह का फल मिलेगा या नहीं, यह तो भगवान जाने, पर ऐसी ही कमाई से कोठियों में रहते हैं, और एक हम हैं कि परिश्रम करने पर भी हाथ में कुछ नहीं रहता।

i) वक्ता का परिचय दीजिए।

उ– वक्ता रमजान जिला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन के चौकीदार। न्यायवान, दयालु परोपकारी। मुसीबत के समय रसीला को आर्थिक सहायता देनेवाला।

ii) यहाँ किनके बारे में चर्चा हो रही है? उन्होंने क्या गुनाह किया है?

उ– यहाँ जिला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन और इंजीनियर बाबू जगतसिंह के बारे में चर्चा हो रही है। उन्होंने रिश्वत लेने का गुनाह किया हे।

iii) यहाँ श्रोता कौन है? उसका वक्ता के साथ क्या संबंध है?

उ– श्रोता इंजीनियर बाबू जगतसिंह का नौकर रसीला है। वह वक्ता जिला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन के चौकीदार रमजान का मित्र है।

iv) इस कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उ– प्रचलित न्याय व्यवस्था पर करारा व्यंग्य समाज के उच्च शिक्षित तथा उच्च प्रतिष्ठित लोग जो रिस्वत लेकर भी सम्मान पूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं उनपर प्रहार किया गया है।

2. कोई बात नहीं है, तो खाओ सौगंध।

i) उपरोक्त कथन किसको किसने कहा?

उ– यह वाक्य रमजान ने, रसीला से कहा।

ii) वक्ता ने यह बात कब कही?

उ– जब रसीला के घर में उसके बच्चे बीमार थे।

iii) श्रोता ने उसे अपनी कौन-सी समस्या बताई?

उ– रसीला का परिवार गाँव में रहता था। जिसमें बूढ़े पिता, पत्नी एक लड़की और दो लड़के रहते थे। उसका वेतन केवल दस रुपए मासिक था। एक दिन उसके

घर से खत आया जिसमें लिखा था बच्चे बीमार हैं, पर उसके पास इलाज के लिए भेजने को रुपए नहीं थे। रसीला ने रमजान को यह समस्या बताई।

iv) वक्ता ने उसे उस समस्या का क्या हल सुझाया?

उ– वक्ता रमजान ने रसीला के हाथों में कुछ पैसे रखकर उस समस्या का हल निकाला।

बात अठन्नी की

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

पहले तो रसीला छिपाता रहा।फिर रमजान ने कहा, ''कोई बात नहीं है, तो खाओ सौगंध।''

i) उपर्युक्त वाक्य के वक्ता तथा श्रोता का परिचय दें।

उ– उपयुक्त वाक्य का वक्ता ज़िला माजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन का चौकीदार मियाँ रमजान है और वक्ता उनके पड़ोसी इंजीनियर बाबू जगतसिंह का नौकर रसीला है। दोनों बड़े ही अच्छे मित्र थे।

ii) वक्ता श्रोता को सौगंध खाने के लिए क्यों कहता है?

उ– एक दिन रमजान ने रसीला के बहुत ही उदास देखा। रमजान ने अपने मित्र रसीला की उदासी का कारण जानना चाहा परंतु रसीला उससे छिपाता रहा तब रमजान ने उसकी उदासी का कारण जानने के लिए उसे सौगंध खाने के लिए कहा।

iii) श्रोता की उदासी का कारण क्या था?

उ– श्रोता रसीला का परिवार गाँव में रहता था। उसके परिवार में बूढ़े पिता, पत्नी और तीन बच्चे थे। इन सबका भार उसी के कंधों पर था और रसीला को मासिक तनख्वाह मात्र दस रुपए मिलती थी। पूरे पैसे भेजने के बाद भी घर का गुजारा नहीं हो पाता था। उसपर गाँव से ख़त आया था कि बच्चे बीमार हैं पैसे भेजो। रसीला के पास गाँव भेजने के लिए पैसे नहीं थे और यही उसकी उदासी का कारण था।

iv) वक्ता ने श्रोता की परेशानी का यह हल सुझाया ?

उ– वक्ता ने श्रोता की परेशानी का यह हल सुझाया कि वह सालों से अपने मालिक के

यहाँ काम कर रहा है तो वह अपने मालिक से कुछ रुपए पेशगी के क्यों नहीं माँग लेता?

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

''भैया गुनाह का फल मिलेगा या नहीं, यह तो भगवान जाने, पर ऐसी कमाई से कोठियों में रहते है, और एक हम हैं कि परिश्रम करने पर भी हाथ में कुछ नहीं रहता।''

i) यहाँ पर किस गुनाह की बात की जा रही है?

उ– यहाँ पर रमजान और रसीला अपने-अपने मालिकों के रिश्वत लेने वाले गुनाह की बात कर रहे हैं। रसीला ने जब रमजान को बताया कि उसके मालिक जगत सिंह ने पाँच सौ रूपए की रिश्वत ली है। तो इस पर रमजान ने कहा यह तो कुछ भी नहीं। उसके मालिक शेख साहब तो जगत सिंह के भी गुरु हैं, उन्होंने भी आज ही एक शिकार फाँसा है, हजार से कम में शेख साहब नहीं मानेंगे। इस प्रकार यहाँ पर मालिकों के रिश्वत के गुनाह की चर्चा की जा रही है।

ii) उपर्युक्त कथन रमजान ने रसीला से क्यों कहा?

उ– रमजान और रसीला दोनों ही नौकर थे। दिन रात परिश्रम करने के बाद भी बड़ी मुश्किल से उनका गुजारा होता था। रसीला के मालिक तो बार-बार प्रार्थना करने के बाद भी उसका वेतन बढ़ाने के लिए तैयार नहीं थे। दोनों यह बात भी जानते थे कि उनके मालिक रिश्वत से बहुत पैसा कमाते हैं। इसी बात की चर्चा करते समय रमजान ने उपर्युक्त कथन कहे।

iii) 'ऐसी कमाई' से क्या तात्पर्य है?

उ– प्रस्तुत पाठ में 'ऐसी कमाई' से तात्पर्य रिश्वत से है। यहाँ पर स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार सफेदपोश लोग ही इस कार्य में लिप्त रहते हैं। अच्छा ख़ासा वेतन मिलने के बाद भी इनकी लालच की भूख मिटती नहीं है और रिश्वत को कमाई का एक और जरिया बना लेते हैं। इसके विपरीत परिश्रम करने वाला दाल-रोटी का जुगाड़ भी नहीं कर पाता और सदैव कष्ट में ही रहता है।

iv) रमजान की उपर्युक्त बात सुनकर रसीला के मन में क्या विचार आया?

उ– रमजान की उपर्युक्त बात सुनकर रसीला के मन में यह आया कि सालों से

वह इंजीनियर जगत बाबू के यहाँ काम कर रहा है इस बीच इस घर में उसके हाथ के नीचे से सैकड़ों रुपए निकल गए पर कभी उसका धर्म और नियत नहीं बिगड़ी। एक-एक आना भी मार लेता तो काफी रकम जुड़ जाती।

3. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

''यह इंसाफ नहीं अँधेर है। सिर्फ़ एक अठन्नी की ही तो बात थी।''

i) रसीला का मुकदमा किसके सामने पेश हुआ?

उ– रसीला का मुकदमा इंजीनियर जगत सिंह के पड़ोसी शेख सलीमुद्दीन ज़िला मजिस्ट्रेट की अदालत में पेश हुआ।

ii) रसीला पर किस आरोप में किसने मुकदमा दायर किया था?

उ– रसीला वर्षों से इंजीनियर बाबू जगत सिंह का नौकर था। उसने कभी कोई बेईमानी नहीं की थी। पंरतु इस बार भूलवश अपना अठन्नी का कर्ज चुकाने के लिए उसने अपने मालिक के लिए पाँच रूपए की जगह साढ़े चार रुपए की मिठाई खरीदी और वही अठन्नी रमजान को देकर अपना कर्ज चुका दिया और इसी आरोप में रसीला के ऊपर इंजीनियर जगत सिंह ने मुकदमा दायर कर दिया था।

iii) रसीला को अपने किस अपराध के लिए कितनी सजा हुई?

उ– रसीला ने अपने मालिक के लिए पाँच रुपए के बदले साढ़े चार रूपए की मिठाई खरीदी और बची अठन्नी से अपना कर्ज चुका दिया। यही मामूली अपराध रसीला से हो गया था। इसलिए रसीला को केवल अठन्नी की चोरी करने के अपराध में छह महीने के कारावास की सजा हुई।

iv) उपर्युक्त उक्ति का क्या कारण थी? स्पष्ट कीजिए।

उ– रमजान ज़िला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन का चौकीदार था और वह रसीला का बहुत ही अच्छा मित्र था। जब ज़िला मजिस्ट्रेट अठन्नी के मामूली अपराध के लिए उसे छह महीने की सजा सुनाते हैं तो रमजान का क्रोध उबल पड़ता है क्योंकि वह जानता था कि फैसला करने वाले शेख साहब और आरोप लगाने वाले जगत बाबू दोनों स्वयं बहुत बड़े रिश्वतखोर अपराधी हैं लेकिन उनका अपराध दबा होने के कारण वे सभ्य कहलाते हैं और एक गरीब को मामूली अपराध के लिए इतनी बड़ी सजा दी जाती है। इसी करण रमजान के मुँह से उपर्युक्त उक्ति निकलती है।

Lesson – 1. बात अठन्नी की

''रसीला ने तुरंत अपना अपराध स्वीकार कर लिया। उसने कोई बहाना ना बनाया। चाहता तो कह सकता था कि यह साजिश है। ..... ''

i) रसीला कौन था? उसका परिचय दीजिए।

उ– रसीला बाबू जगत सिंह का नौकर था। वह एक गरीब आदमी था। उसकी अवस्था बड़ी ही दयनीय और शोचनीय थी क्योंकि उसका वेतन सिर्फ ₹ १० था। उसके गांव में उसके बूढ़े पिता, पत्नी, एक लड़की और दो लड़के थे। उन सब का भार उसी के कंधों पर था। वह अपनी जिम्मेदारियों का अहसास करते हुए अपनी पूरी तनख्वाह गांव भेज देता था। वह अपना हर काम बड़ी ईमानदारी और सच्चाई से करता था। वह बड़ा मेहनती था एवं उसका एक मित्र भी था जिसका नाम रमजान था।

ii) रसीला का क्या अपराध था? स्पष्ट कीजिए ।

उ– रसीला इंजीनियर बाबू जगत सिंह का वफादार नौकर था। वह घोर आर्थिक संकट में जूझ रहा था क्योंकि उसका वेतन बहुत ही कम था। उसके घर में बच्चे बीमार थे तथा उसके पास घर वालों को भेजने के लिए अधिक रुपए नहीं थे। उसको रुपयों की बहुत आवश्यकता थी। ऐसे समय में उसकी सहायता उसके अभिन्न मित्र रमजान ने की थी। रसीला ने रमजान के रुपए धीरे-धीरे वापस भी कर दिए थे लेकिन अठन्नी अभी भी देनी थी। उसने कर्ज को उतारने के लिए अपने मालिक के हिसाब में हेराफेरी की थी और यही उसका अपराध बन गया था जिसके कारण बाद में जाकर उसे ६ महीने की सजा सुना दी गई।

iii) 'तुरंत अपराध स्वीकार करने' से आप क्या समझते हैं? उसने ऐसा क्यों किया? समझा कर लिखिए।

उ– 'तुरंत अपराध स्वीकार करने' से तात्पर्य है तुरंत अपनी गलती को मान लेना। इंजीनियर साहब के नौकर रसीला ने तुरंत अपनी गलती मान ली थी। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह पेशे से चोर नहीं था। परिस्थितिवश किसी कमजोरी के क्षण में उससे ऐसा हो गया था। इसलिए उसने अपने अपराध को तुरंत स्वीकार कर लिया। वह ऐसा भी जानता था कि उसका अपराध स्वीकार न करने से उसे और भी मार पड़ेगी और उसे जेल भेज दिया जाएगा।

iv) कहानी को ध्यान में रखते हुए अपने विचार लिखिए कि हमें अपने नौकरों से कैसा व्यवहार करना चाहिए?

उ– 'बात अठन्नी की' कहानी घर के नौकरों की वफादारी तथा मालिकों की स्वार्थपरता को दर्शाने वाली कहानी है। इसके माध्यम से हमें यह सीख मिलती है कि हमें अपने घर के नौकरों से कैसा व्यवहार करना चाहिए। उनके साथ हमें आत्मीयता पूर्ण व्यवहार करना चाहिए। उनकी भावनाओं की कदर करनी चाहिए। उनकी मजबूरियों को समझने का प्रयास करना चाहिए। जिस प्रकार इस कहानी में रसीला अपने मालिक से वेतन वृद्धि की प्रार्थना करता है क्योंकि उसकी आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब थी, लेकिन उसके मालिक को इस बात की कोई परवाह नहीं हुई और उन्होंने उसकी कोई मदद नहीं की। जब रसीला अपने मालिक के प्रति इतना वफादार था तो मालिक का भी कर्त्तव्य बनता था कि वह उसकी सहायता करता और यदि उसने अठन्नी की हेराफेरी की थी तो रसीला को उसके लिए सजा देने के स्थान पर वह उसकी मजबूरी समझ कर उसकी मदद कर देता या उसे माफ कर देता।

Extra Questions

Lesson – 1. बात अठन्नी की

i) 'बात अठन्नी की' कहानी का उद्देश्य अपने शब्दों में लिखें।

उ– इस कहानी में लेखक सुदर्शन जी ने गरीब लोगों में सहृदयता, सहयोग की भावना और अपने मालिक को प्रति आदर भावना के गुणों को बताया है। वे अधिक से अधिक काम करके मालिक को प्रसन्न करना चाहते हैं लेकिन मालिक अपने नौकरों पर दया करने में कृपणता दिखाते हैं और उनकी छोटी सी भूल को भी क्षमा नहीं करते। बाबू जगत सिंह रिश्वत लेते हैं। वह अपने नौकर की अठन्नी की बेईमानी को भी क्षमा नहीं करते हैं और उसे पुलिस में दे देते हैं। रसीला और रमज़ान में मित्रता है। रमज़ान रसीला की पैसे से भी मदद कर देता है। अंत में लेखक ने व्यंग्य करते हुए लिखा है - ''रात के समय जब हज़ार, पांच सौ के चोर नरम गद्दों पर मीठी नींद ले रहे थे, अठन्नी का चोर जेल की तंग, अंधेरी कोठरी में पछता रहा था।

ii) शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उ– इस कहानी में शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट ही है कि यह कहानी अठन्नी की बात से ही शुरू होती है। इंजीनियर साहब के नौकर को जिला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन के चौकीदार रमज़ान ने उसकी परेशानी में कुछ रुपए दिए थे ताकि उसकी कुछ मदद हो सके। कुछ समय में उसने अपने दोस्त रमज़ान के सारे रुपए लौटा दिए लेकिन अठन्नी बाकी रह गई। एक दिन इंजीनियर बाबू ने रसीला से पांच रुपए की मिठाई मंगाई तो उसने साढ़े चार रुपए की मिठाई लाकर उन्हें दे दी और बची हुई अठन्नी से अपना कर्ज चुका दिया। इस अठन्नी की चोरी के लिए उस पर मुकदमा चला और उसे छह महीने की सजा हुई। विषय में अठन्नी को इस तरह से दर्शाया गया है जैसे वह अठन्नी एक बहुत बड़ी रकम थी जिसे वापस करने के लिए उसने हेराफारी की और रसीला को छ: महीने की जेल हो गई यानी उसके मालिक और शेख सलीमुद्दीन के लिए यह छोटी-छोटी चोरियां बहुत बड़ा गुनाह थीं लेकिन वे खुद जो गुनाह करते थे उसके लिए कोई सजा नहीं मिलती।

iii) रसीला का चरित्र चित्रण कीजिए।

उ– रसीला एक गरीब श्रेणी का नौकर था और कामकाजी था और हमेशा अपने मालिक का हर काम बड़ी ईमानदारी से करता था। उसके परिवार का बोझ उसी के कंधों पर था। वह इसी कारण कोई खर्चा नहीं करता था अर्थात् वह बदखर्चीला नहीं था। वह बड़ा ही जिम्मेदार था। उसने अपने मित्र का सारा पैसा चुका दिया बस गलती यही कर दी कि उसने मालिक के पैसे से अठन्नी की चोरी कर ली क्योंकि उसको अपने मित्र को अठन्नी वापस करनी थी।

iv) रसीला को सजा दिलवाने के लिए उसके मालिक ने क्या किया?

उ– रसीला को सजा दिलवाने के लिए उसके मालिक ने पहले तो उसे चांटा मारते हुए यह कहा कि वह उसे उस हलवाई के पास ले जाएगा जहां से उसने मिठाई खरीदी थी। जब वह मना करने लगा तब वे उसे सीधा थाने ले गए और वहां पर उन्होंने हवलदार को पांच रुपए दे दिए ताकि वह उसे मारपीट कर मनवा ले। एक अठन्नी की चोरी की सजा दिलवाने के लिए उन्होंने रिश्वत दी और जेल में भिजवा दिया।

v) रमज़ान की आँखों में खून क्यों उतर आया?

उ– अपने मालिक शेख सलीमुद्दीन का फैसला सुनकर रमज़ान की आँखों में खून उतर आया। उसे यह कतई उम्मीद नहीं थी कि एक अठन्नी के लिए उसके मित्र रसीला को इस तरह की छ: महीने की सजा दे दी जाएगी। वह जानता था कि उसके मालिक शेख सलीमुद्दीन और बाबू जगतसिंह दोनों ही रिश्वतखोर थे। वे लोग इतनी रिश्वत लेते थे तो उनके लिए अठन्नी की बात कोई बड़ी नहीं थी। लेकिन अंत में रसीला को कैद हो ही गई।

कहानी – काकी
कहानीकार – सियासमशरण गुप्त

1. उसके अंत:स्थल में वह शोक जाकर बैठ गया। वह प्राय : बैठा-बैठा शून्य मन में आकाश की ओर ताका करता। एक दिन उसने ऊपर आसमान में पतंग उड़ती देखी। न जाने क्या सोचकर उसका हृदय एकदम खिल उठा। विश्वेश्वर के पास जाकर बोला, ''काका! मुझे एक पतंग मंगा दो।''

i) 'उसके' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है? उसके दुखी होने का कारण था?

उ– उसके शब्द का प्रयोग अबोध बालक श्यामू के लिए किया गया है। उसके दु:खी होने के कारण यह था कि उसकी माँ की मृत्यु हो गई थी। वह अपनी माँ से बहुत प्यार करता था और उसे काकी कहकर पुकारता था। वह उसका वियोग सहन नहीं कर सका। वह इस कठोर सत्य को सहन नहीं कर पा रहा था। उसका कोमल बाल मन अपनी माँ को वापस लाने के लिए हर सम्भव कोशिश कर रहा था।

ii) क्या देखकर उसका हृदय खिल उठा था? उसने अपने पिता से क्या माँगा?

उ– आसमान में उड़ती पतंग देखकर उसका हृदय खिल उठा। उसने अपने पिता से पतंग माँगी।

iii) उसने उस चीज का प्रबंध कैसे किया? क्या उसके इस कार्य को अपराध कहना उचित होगा?

उ– श्यामू पतंग पाने के लिए बहुत उत्कंठित था। उसने अपने पिता से पतंग मँगवाने को कहा, परंतु उसके पिता ने उसकी माँग की ओर ध्यान नहीं दिया। वह अपनी

इच्छा को किसी भी तरह रोक नहीं सका। एक खूँटी पर पिता जी का कोट टंगा था। उसने उसमें से चवन्नी निकाली और भोला की जीजी हाथों से पतंग मँगवा ली। जैसे वर्षा के अनंतर एक दो दिन में पृथ्वी के ऊपर का पानी तो अगोचर हो जाता है, परंतु भीतर ही भीतर उसकी आर्द्रता जैसे बहुत दिन तक बनी रहती है, वैसे ही उसके अंत:स्तल में वह रोक जाकर बस गया था। यद्यपि श्यामू ने पैसों का प्रबंध करने के लिए चोरी की थी, किंतु इसे चोरी कहना उचित न होगा। क्योंकि वह एक अबोध बालक था। जो अपनी माँ का वियोग सहन नहीं कर पा रहा था।

iv) विश्वेश्वर ने बालक के साथ कैसा व्यवहार किया और सच्चाई जानने के बाद उनकी स्थिति कैसी रही?

उ– विश्वेश्वर ने चवन्नी की चोरी की बात जानने पर श्यामू के मुहँ पर दो तमाचे जड़ दिए। उसके कान मले और उसे खूब डाँटा। पास पड़ी उसकी पतंग भी फाड़ दी। परंतु सच्चाई जानने बाद वह हतबुद्धि रह गये। उन्हें दु:ख और पछतावा भी हुआ।

2. यद्यपि बुद्धिमान गुरुजनों ने उसे विश्वास दिलाया कि उसकी काकी उसके मामा के यहाँ गई है, परंतु असत्य के आवरण में सत्य बहुत समय तक छिपा न रह सका। आस-पास के अबोध बालकों के मुँह से यह प्रकट हो गया।

i) किसको क्या विश्वास दिलाया गया था?

उ– श्यामू की माँ गुजर जाने के बाद घर के गुरुजनों ने उसे यह विश्वास दिलाया कि उसकी काकी मामा के यहाँ गई है।

ii) सत्य क्या था और वह कैसे प्रकट हुआ?

उ– सत्य यह था कि श्यामू की काकी का देहांत हो गया था और सत्य आस-पास के अबोध बालकों के मुँह से ही श्यामू के सामने प्रकट हो गया।

iii) सत्य प्रकट हो जाने पर क्या हुआ?

उ– सत्य प्रकट हो जाने पर श्यामू काकी के लिए कई दिन तक लगातार रोता रहा। उसका रोदन तो क्रमश: शांत हो गया, परंतु शोक शांत न हो सका।

iv) कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर अपने विचार लिखिए।

उ– काकी कहानी में कहानीकार सियारामशरण गुप्त ने श्यामू की काकी की मृत्यु को एक मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। एक अबोध तथा मासूम बालक की मातृ-

वियोग की पीड़ा को पूरी कहानी में सफल रूप से दर्शाने की कोशिश की गई है। अत: इस कहानी का शीर्षक सार्थक है।

3. ''उस दिन बड़े सवेरे श्यामू की नींद खुली तो देखा कि घर भर में कोहराम मचा हुआ है।''

i) घर में कोहराम क्यों मचा हुआ था? श्यामू को क्या लगा?

उ– श्यामू की माँ का देहांत हो गया था इसलिए घर में कोहराम मचा हुआ था। श्यामू को लगा कि उसकी मां सफेद कपड़ा ओढ़े हुए जमीन पर सो रही है। यह एक बच्चे के लिए साधारण सी बात थी परंतु वह यह नहीं समझ पा रहा था कि ऐसी भीड़ घर में क्यों थी।

ii) काकी को ले जाते समय श्यामू ने क्या उपद्रव मचाया?

उ– लोग जब उमा अर्थात् श्यामू की मां को उठाकर ले जाने लगे जब श्यामू ने बड़ा उपद्रव मचाया। लोगों के हाथ से छूटकर वह उमा के ऊपर जा गिरा और बोला ''काकी सो रही है तो उसे कहां लेकर जा रहे हो।'' वह कुछ भी नहीं समझ पा रहा था। उसने उनको रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन वह उसमें असफ़ल रहा।

iii) काकी के बारे में उसे क्या बताया गया? क्या उससे सत्य छिपा रहा?

उ– काकी के बारे में बुद्धिमान लोगों ने उसे विश्वास दिलाया कि उसकी काकी उसके मामा के यहां गई है। लेकिन सत्य अधिक दिनों तक छिपा न रह सका। आसपास के अबोध बालकों के मुंह से यह बात प्रकट हो गई कि उसकी माँ का देहांत हो गया है और वह राम के पास चली गई है।

iv) मां के देहांत की खबर सुनने के पश्चात श्यामू का क्या हुआ?

उ– कई दिन लगातार रोते-रोते उसका रोना धीरे-धीरे शांत हो गया पर उसके हृदय में शोक जाकर बस गया था। वह हमेशा चुपचाप बैठा आकाश की और ताका करता कि शायद उसकी काकी कहीं दिख जाए। वह हमेशा आकाश में यह देखता रहता कि उसकी काकी राम के यहां कहां चली गई है।

Extra Questions

Lesson – 2 : काकी

i) काकी विषय में शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उ– इस कहानी का शीर्षक 'काकी' कहानी के अनुरूप ही रहा गया है क्योंकि पूरी कहानी श्यामू की मां काकी के इर्द-गिर्द घूमती है। श्यामू जो इस कहानी का मुख्य पात्र है, वह अपनी मां को बहुत प्यार करता है और उसे प्यार से 'काकी' कहता है। इस प्रकार उसकी मां कहानी 'काकी' का शीर्षक लेकर आगे बढ़ती है। काकी की मृत्यु पर श्यामू बड़ा कोहराम मचाता है कि उसकी काकी को कहां ले जा रहे हैं। जैसे-तैसे उसे शांत किया गया। कुछ दिनों के बाद उसे ज्ञात हुआ कि उसकी मां अर्थात काकी राम के यहाँ चली गई है। अपनी बाल-बुद्धि के अनुसार उसने एक योजना बनाई कि वह पतंग के द्वारा काकी को राम के यहाँ से नीचे उतारेगा। यहाँ उसकी मातृ प्रेम की परकाष्टा है।

ii) श्यामू ने अच्छी-अच्छी दो रस्सियाँ क्यों मंगवाई?

उ– अपनी काकी को राम के यहां से नीचे उतारने के लिए श्यामू ने पतंग से उनको वापस लाने की तरकीब बनाई थी। इसके लिए उसने भोला को अपनी जीजी से पतंग और डोर मंगवाने के लिए कहा था। लेकिन भोला, जो श्यामू से अधिक समझदार था, उसने एक सुझाव दिया कि डोर के टूट जाने का डर होता है इसलिए अगर मोटी रस्सी हो तो सब ठीक हो जाएगा। इसी बात को सुनकर श्यामू रात भर सोचता रहा और बाद में इस निर्णय में पहुंचा कि कहीं रस्सी छोटी न पड़ जाए इसके लिए उसने दो रस्सियाँ मंगा दीं।

iii) 'काकी' विषय के आधार पर बाल मनोविज्ञान का विश्लेषण कीजिए।

उ– बच्चे बहुत ही भोले-भाले तथा नासमझ होते हैं। वे किसी भी बात से बहुत ही जल्दी प्रसन्न तथा नाराज़ हो जाते हैं। वह शीघ्र ही किसी बात को लेकर चिंतित भी हो जाते हैं। वह बात की गहराई को समझ नहीं पाते हैं इसलिए जब श्यामू आसमान में उड़ती पतंग देखता है तो बहुत ही प्रसन्न हो जाता है और तरह-तरह की कल्पनाएं करने लगता है कि अब वह भी पतंग लेगा। उस पर काकी लिखवाएगा। उसको आसमान में उड़ाएगा। फिर उस पर बैठ कर उसकी मां नीचे उसके पास आ जाएगी। जब भोला मोटी डोर की बात करता है तो वह सोच में

पड़ गया है और उसे भी लगता है कि पतली डोर पर बैठकर तो उसकी काकी डोर टूटने से गिर जाएगी और घायल हो जाएगी और सोचता है कि मोटी डोर मंगवाने के लिए पैसे भी कहां से आएंगे। जबकी भोला और श्यामू दोनों नहीं सोच पाए कि रस्सी से पतंग उड़ेगी ही नहीं। दूसरी तरफ कोई भी आदमी रस्सी में बैठकर नहीं आ सकता। वह अपनी बाल सुलभ प्रवृत्ति के कारण पैसे के लिए चिंतित हो जाता है तथा देर रात तक सो भी नहीं पाता। दूसरे दिन वह पहले दिन वाली तरकीब से अपने पिता के कोट की जेब से एक रूपए निकाल लेता है।

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

उस दिन बड़े सवेर श्यामू की नींद खुली तो उसने देखा घर भर में कुहराम मचा हुआ है।

i) बड़े सवेरे किसकी नींद किस कारणवश खुली?

उ– बड़े सवेरे श्यामू की नीद घर में मचे कोहराम के कारण खुली।

ii) श्यामू ने उठने के बाद क्या देखा?

उ– उस दिन बड़े सवेरे श्यामू की नींद खुली तो उसने देखा कि उसके घर में कुहराम मचा हुआ है। उसकी माँ ऊपर से नीचे तक एक कपड़ा ओढे हुए कंबल पर भूमि शयन कर रही है और घर के सब लोग उसे घेरकर बैठे बड़े करुण ढंग से विलाप कर रहे हैं।

iii) श्यामू ने उपद्रव क्यों मचाया?

उ– उस दिन बड़े सवेरे श्यामू की नींद खुली तो उसने देखा कि उसके घर में कुहराम मचा हुआ है। उसकी माँ ऊपर से नीचे तक एक कपड़ा ओढ़े हुए कंबल पर भूमि शयन कर रही है और घर के सब लोग उसे, धरकर बैठे बड़े करुण ढंग से विलाप कर रहे हैं। उसके बाद जब उसकी माँ को श्मशान ले जाने लगे तो श्यामू ने अपनी माँ को रोकने के लिए बड़ा उपद्रव मचाया।

iv) श्यामू को सत्य का पता किस प्रकार चला?

उ– श्यामू अबोध बालक होने के कारण बड़े बुद्धिमान गुरुजनों ने उससे उसकी माँ की मृत्यु की बात यह कहकर छिपाई कि उसकी माँ मामा के यहाँ गई है परंतु जैसा कि कहा जाता है असत्य के आवरण में सत्य बहुत समय तक छिपा नहीं रह सकता ठीक उसी प्रकार श्यामू जब अपने हमउम्र दोस्तों के साथ खेलने गया तब

तो उनके मुख से यह बात उजागर हो गई कि उसकी माँ राम के यहाँ गई है और इस तरह श्यामू को पता चल ही गया कि उसकी माँ की मृत्यु हो गई है।

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

वर्षा के अनंतर एक दो दिन में ही पृथ्वी के ऊपर का पानी तो अगोचर हो जाता है, परंतु भीतर-ही-भीतर उसकी आर्द्रता जैसे बहुत दिन तक बनी रहती है, वेसे ही उसके अंतस्तल में वह शोक जाकर बस गया था।

i) उपर्युक्त कथन किससे संबंधित है? उसका परिचय दें।

उ– उपर्युक्त कथन इस कहानी के मुख्य पात्र श्यामू से संबंधित है। वह अपनी माँ से बहुत प्यार करता है। वह इतना अबोध बालक है कि सत्य और असत्य के ज्ञान से अपरिचित होने के कारण अपनी माँ की मृत्यु की बात भी नहीं समझ पाता। उसे लगता है उसकी माँ ईश्वर के पास गई है जिसे वह पतंग की डोर के सहारे नीचे ला सकता है।

ii) उपर्युक्त पंक्तियों का संदर्भ स्पष्ट कीजिए।

उ– प्रस्तुत पंक्तियों का संदर्भ यह है कि श्यामू अपनी माँ की मृत्यु के बाद बहुत रोता था और उसे चुप कराने के लिए घर के बुद्धिमान गुरुजनों ने उसे यह विश्वास दिलाया कि उसकी माँ उसके मामा के यहाँ गई है। लेकिन आस-पास के मित्रों से उसे इस सत्य का पता चलता है कि उसकी माँ ईश्वर के पास गई है। इस प्रकार बहुत दिन तक रोते रहने के बाद उसका रुदन तो शांत हो जाता है लेकिन माँ के वियोग की पीड़ा उसके हृदय में शोक बनकर बस जाता है।

iii) नन्हें बालक के लिए माँ का वियोग सबसे बड़ा वियोग होता है। स्पष्ट करें।

उ– अबोध बालकों का सारा संसार अपनी माँ के आस-पास ही घूमता रहता है। उनके लिए माँ से बढ़कर कुछ भी नहीं होता। बालक की माँ बिना बोले ही उसकी सारी बातें समझ लेती है। साथ ही बालकों का हृदय अत्यंत कोमल, भावुक और संवेदनशील होता है और वे मातृवियोग की पीड़ा को सहन नहीं कर पाते हैं। और वैसे भी माँ का स्थान इस संसार में कोई नहीं ले सकता इसलिए अपनी माँ को खोना एक बालक के लिए सबसे बड़ा वियोग होता है।

iv) श्यामू अकसर शून्य में क्यों ताका करता था?

उ– अबोध बालक होने के कारण श्यामू अपनी माँ की मृत्यु की वास्तविकता से परिचित था। बड़ों के समझाने पर उसे लगता था कि उसकी माँ उसके मामा के पास गई है लेकिन हमउम्र के बच्चों से उसे पता चलता है कि उसकी माँ राम के पास गई है। वह पहले अपनी माँ के लिए बहुत रोता था परंतु धीरे-धीरे उसका रोना तो कम हो गया परंतु फिर भी उसकी माँ नहीं लौटी अत: श्यामू अकसर अपनी माँ के वियोग दु:ख को सहन न कर पाने के कारण शून्य में ताका करता था।

3. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

एक दिन उसने ऊपर आसमान में पतंग उड़ती देखी। न जाने क्या सोचकर उसका हृदय एकदम खिल उठा।

i) किसका हृदय क्यों खिल उठा?

उ– श्यामू अपनी माँ के जाने के बाद हमेशा दुखी रहा करता था। उसके हमउम्र बच्चों के अनुसार उसकी माँ राम के पास गई है इसलिए वह प्राय: शून्य मन से आकाश की और ताका करता था। एक दिन उसने ऊपर आसमान में पतंग उड़ती देखी और श्यामू ने सोचा कि पतंग की डोर को ऊपर रामजी के घर भेजकर वह अपनी माँ को वापस बुला लेगा और यही सोचकर उसका हृदय खिल उठा।

महायज्ञ का पुरस्कार

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

यह देख सेठ का दिल भर आया – ''बेचारे को कई दिन से खाना नहीं मिला दीखता, तभी यह हालत हो गई है।''

i) यज्ञ बेचने के लिए सेठ जी कहाँ गए?

उ– कुंन्दरपुर नाम का एक नगर था, जिसमें एक बहुत सेठ रहते थे। लोग उन्हें धन्ना सेठ कहते थे। धन की उनके पास कोई कमी न थी। विपदग्रस्त सेठ ने उन्हीं के हाथ एक यज्ञ बेचने का विचार किया। इस तरह सेठ जी कुंदनपुर के धन्ना सेठ के पास अपना यज्ञ बेचने गए।

ii) सेठ जी ने कहाँ विश्राम और भोजन करने की सोची?

उ– सेठ जी बड़े तड़के उठे और कुंदनपुर की ओर चल दिए। गर्मी के दिन थे। सेठ जी ने सोचा कि सूरज निकलने से पूर्व जितना ज्यादा रास्ता पार कर लेंगे उतना ही अच्छा होगा परंतु आधा रास्ता पार करते ही थकान ने उन्हें आ घेरा। सामने वृक्षों का कुंज और कुआँ देखा तो सेठ जी ने थोड़ा देर रुककर विश्राम और भोजन करने का निश्चय किया।

iii) सेठ जी ने अपना सारा भोजन कुत्ते को क्यों खिला दिया?

उ– सामने वृक्षों का कुंज और कुआँ देखा तो सेठ जी ने थोड़ी देर रुककर विश्राम ओर भोजन करने का निश्चय किया। पोटली से लोटा-डोर निकालकर पानी खींचा और हाथ-पाँव धोए। उसके बाद एक लोटा पानी ले पेड़ के नीचे आ बैठे और खाने के लिए रोटी निकालकर तोड़ने ही वाले थे कि क्या देखते हैं एक कुत्ता हाथ भर की दूरी पर पड़ा छटपटा रहा था। भूख के कारण वह इतना दुर्बल हो गया कि अपनी गर्दन भी नहीं उठा पा रहा था। यह देख सेठ का दिल भर आया और उन्होंने अपना सारा भोजन धीरे-धीरे कुत्ते को खिला दिया।

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

''सेठ जी! यज्ञ खरीदने के लिए हम तैयार है, पर आपको अपना महायज्ञ बेचना होगा।''

i) उपर्युक्त अवतरण के वक्ता का परिचय दें।

उ– उपर्युक्त अवतरण की वक्ता कुंदनपुर के धन्ना सेठ की पत्नी बड़ी विदुषी स्त्री थी। उनके बारे में यह प्रचलित था कि उन्हें कोई देवीय शक्ति प्राप्त है जिसके कारण वे तीनों लोकों की बात जान लेती है। इसी शक्ति के बल पर वह जान लेती हैं कि यज्ञ बेचने वाले सेठ अत्यंत उदार, कर्त्तव्यपरायण और धर्मनिष्ठ हैं।

ii) श्रोता को वक्ता की किस बात पर आश्चर्य हुआ?

उ– वक्ता धन्ना सेठ की पत्नी ने जब श्रोता सेठ जी से अपना महायज्ञ बेचने की बात की तो उन्हें आश्चर्य हुआ क्योंकि महायज्ञ की बात तो छोड़िए सेठ ने बरसों से कोई सामान्य यज्ञ भी नहीं किया था।

iii) सेठ जी धन्ना सेठ की पत्नी की बात सुनकर क्या सोचने लगे?

उ– धन्ना सेठ की पत्नी ने जब महायज्ञ की बात की तो सेठजी सोचने लगे कि इन्हें यज्ञ तो खरीदना नहीं है नाहक ही मेरी हँसी उड़ा रही हैं क्योंकि जिस महायज्ञ की वे बात कर रही हैं वो तो उन्होंने किया ही नहीं है।

iv) धन्ना सेठ की पत्नी ने सेठ के किस काम को महायज्ञ बताया और क्यों?

उ– धन्ना सेठ की पत्नी के अनुसार स्वयं भूखे रहकर चार रोटियाँ किसी भूखे कुत्ते को खिलाना ही महायज्ञ है। यज्ञ कमाने की इच्छा से धन-दौलत लुटाकर किया गया यज्ञ, सच्चा यज्ञ नहीं है, निस्वार्थ भाव से किया गया कर्म ही सच्चा यज्ञ महायज्ञ है।

3. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

विपत्ति में भी मेरे पति ने धर्म नहीं छोड़ा। धन्य हैं मेरे पति। सेठ के चरणों की रज मस्तक पर लगाते हुए बोली, ''धीरज रखें, भगवान सब भला करेंगे।''

i) उपर्युक्त अवतरण की वक्ता का परिचय दें।

उ– उपर्युक्त अवतरण की वक्ता सेठ की पत्नी है। सेठ की पत्नी भी बुद्धिमती स्त्री है। मुसीबत के समय अपना धैर्य न खोते हुए उसने अपने पति को अपना एक यज्ञ बेचने की सलाह दी। विपत्ति की स्थिति में वह अपने पति को ईश्वर पर विश्वास और धीरज धारण करने को कहती है। इस प्रकार सेठ की पत्नी भी कर्तव्य परायण, धीरवती, ईश्वर पर निष्ठा रखने वाली और संतोषी स्त्री थी।

ii) वक्ता ने अपने पति की रज मस्तक पर क्यों लगाई?

उ– सेठानी के पति जब कुंदनपुर गाँव से धन्ना सेठ के यहाँ से खाली हाथ घर लौटे तो पहले तो वे काँप उठी पर जब उन्हें सारी घटना की जानकारी मिली तो उनकी वेदना जाती रही। उनका हृदय यह देखकर उल्लसित हो गया कि विपत्ति में भी उनके पति ने अपना धर्म नहीं छोड़ा और इसी बात के लिए सेठानी ने अपने पति की रज मस्तक से लगाई।

iii) सेठानी भौचक्की-सी क्यों खड़ी हो गई?

उ– रात के समय सेठानी उठकर दालान में दिया जलाने आई तो रास्ते में किसी चीज सो टकराकर गिरते-गिरते बची। सँभलकर आले तक पहुँची और दिया जलाकर नीचे की ओर निगाह डाली तो देखा कि दहलीज के सहारे पत्थर ऊँचा हो गया है

जिसके बीचों बीच लोहें का कुंदा लगा है। शाम तक तो वहाँ वह पत्थर बिल्कुल भी उठा नहीं था अब यह अकस्मात कैसे उठ गया? यही सब देखकर सेठानी भौचक्की-सी खड़ी हो गई।

iv) सेठ को धन की प्राप्ति किस प्रकार हुई?

उ– सेठानी ने जब सेठ को बुलाकर दालान में लगे लोहे के कुंदे के बारे में बताया तो सेठ जी भी आश्चर्य में पड़ गए। सेठ ने कुंदे को पकड़कर खींचा तो पत्थर उठ गया और अंदर जाने के लिए सीढ़ियाँ निकल आईं। सेठ और सेठानी सीढ़ियाँ उतरने लगे। कुछ सीढ़ियाँ उतरते ही इतना प्रकाश सामने आया कि उनकी आँखें चौंधियाने लगी। सेठ ने देखा वह एक विशाल तहखाना है और जवाहरातों से जगमगा रहा है। इस तरह सेठ को धन की प्राप्ति हुई।

Lesson – 3. महायज्ञ का पुरस्कार

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

''सामने वृक्षों का एक कुंज और कुआं देखकर सेठ जी ने विचार किया कि यहां थोड़ी देर रुक कर भोजन और विश्राम कर लेना चाहिए।''

i) वृक्षों का एक कुंज और कुआं देखकर सेठ जी ने क्या किया और उन्होंने थोड़ी दूर पर क्या देखा?

उ– वृक्षों की छाया और कुआं देखकर सेठ जी ने विचार किया कि विश्राम और भोजन करने के बाद वे आगे चलेंगे। पोटली से लोटा डोर निकाल कर उन्होंने पानी खींचा और हाथ पैर धोए। उसके बाद वह एक लोटा पानी लेकर उस पेड़ के नीचे बैठ गए और खाने के लिए रोटियाँ निकाल ली। उन्होंने देखा कि थोड़ी दूर पर एक कुत्ता भूख के मारे छटपटा रहा है उसकी अवस्था मरणासन्न है।

ii) सेठ ने भूखे कुत्ते के साथ क्या उपकार किया?

उ– सेठ को उस भूखे कुत्ते पर दया आई और उन्होंने एक रोटी उसके सामने डाल दी। रोटी खाने के बाद उस कुत्ते के शरीर में कुछ जान आई। सेठ ने सोचा कि एक और रोटी अगर उसे खिला दूं तो यह चलने फिरने लायक हो जाएगा। कुत्ते की आँखों में कृतज्ञता को देखकर सेठ ने तीसरी रोटी भी उस कुत्ते को खिला दी और अंत में चौथी रोटी को खिलाते हुए सेठ ने पानी पी कर ही काम चला लिया।

iii) चौथी रोटी खिलाते समय सेठ ने क्या सोचा?

उ– चौथी रोटी खिलाते समय सेठ जी ने सोचा कि मुझसे अधिक इस कुत्ते को रोटी की आवश्यकता है। मैं तो अपना काम पानी पीकर भी चला लूंगा। इस बेचारे मूक और बेबस जीव को एक रोटी और मिल जाए तो निश्चय ही इस में इतनी ताकत आ जाएगी कि किसी बस्ती तक यह पहुंच सकेगा और अपना जीवन फिर से जी सकेगा।

iv) सेठ अपने गंतव्य स्थल पर कब पहुंचे? वहाँ उनकी किससे और क्या बातें हुई?

उ– दीया जले सेठ कुंदनपुर पहुंच गए। सेठ हवेली पर पहुंचे तो धन्ना सेठ ने उनका स्वागत किया और उनके आने का कारण पूछा। सेठ ने कहा कि वह संकट में हैं अत: अपना एक यज्ञ बेचना चाहते हैं। धन्ना सेठ की पत्नी ने वहाँ आकर कहा कि वे उनका महायज्ञ खरीदने को तैयार हैं, यज्ञ नहीं। महायज्ञ का नाम सुनकर सेठ को आश्चर्य हुआ क्योंकि उन्होंने तो कोई महायज्ञ किया ही नहीं था।

Extra Question : महाजज्ञ का पुरस्कार

i) 'महायज्ञ का पुरस्कार' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उ– इस कहानी में लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि किसी भी अच्छे कार्य या पुण्य का फल अवश्य मिलता है। कोई भी परोपकार अथवा पुण्य के लिए किया गया कार्य बेकार नहीं जाता। वह एक प्रकार का यज्ञ है। एक धनी सेठ थे, धर्मपरायण और अत्यंत विनम्र। सेठ ने अनेक यज्ञ किए थे और दान में न जाने कितना धन दीन-दुखियों में बांट दिया था। परंतु दिन पलटा और सेठ के यहां गरीबी आ गई। उन दिनों यज्ञ बेचने की प्रथा थी। सेठ भी अपने यज्ञ बेचने के लिए कुंदनपुर के सेठ के यहां चलने को तैयार हो गए। सेठानी ने रास्ते के लिए चार रोटियां कपड़े में बांधकर सेठ को दे दीं। रास्ते में एक भूखे कुत्ते को देखकर सेठ ने चारों रोटियाँ उसे खिला दीं। फिर वह धन्ना सेठ के यहां कुंदनपुर पहुँची तो उनकी सेठानी ने उनसे महायज्ञ बेचने को कहा। यज्ञ बेचने आए सेठ ने कुत्ते को रोटियाँ खिलाने को महायज्ञ नहीं समझा और वापस लौट गए। घर आकर शाम को उन्हीं के घर में उन्हें एक बड़ा खजाना मिला जो उनके द्वारा किए गए महायज्ञ का पुरस्कार था।

ii) 'महायज्ञ का पुरस्कार' नामक शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उ– इस कहानी का शीर्षक महायज्ञ का पुरस्कार यथोचित है। सेठ द्वारा एक भूखे कुत्ते को चारों रोटियाँ खिला देना उनका एक बड़ा यज्ञ बन गया था। खुद भूखे रहकर एक भूखे कुत्ते को रोटियाँ खिलाकर उसके प्राणों की रक्षा की। यह उनका सबसे बड़ा पुण्य बन गया। कुंदनपुर की सेठानी ने इसी महायज्ञ को खरीदने का प्रस्ताव रखा। सेठ ने वह यज्ञ नहीं बेचा क्योंकि उनके विचार में किसी भूखे को खाना खिला देना कोई यज्ञ नहीं बल्कि मानवोचित्त कार्य था। लेकिन घर जाकर उनको एक बड़ा खजाना मिल गया जो भगवान के द्वारा उनको दिया गया उस महायज्ञ का पुरस्कार था।

iii) दीया जलाते समय क्या घटना घटी?

उ– रात का अंधकार फैलता जा रहा था। सेठानी उठकर दिया जलाने के लिए दालान में आई तो रास्ते में किसी चीज़ से ठोकर लगी। संभल कर दिया जलाकर नीचे की ओर देखा कि दहलीज़ को सहारे एक पत्थर ऊंचा हो गया था और उसके बीचों-बीच एक लोहे का कुंदा लगा था। उसे जब उठाया गया तो एक तहखाना मिला जिसमें बहुत सारे हीरे-जवाहरात जगमगा रहे थे।

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

''महायज्ञ और आज'' वे समझ गए कि सेठानी उनका मजाक उड़ा रही है। उन्होंने विनम्र भाव से कहा, 'आप आज की कहती है, मैंने तो वर्षों से कोई यज्ञ नहीं किया। मेरी स्थिति ही ऐसी नहीं थी।'

i) सेठानी की बात सुनकर सेठजी को ऐसा क्यों लगा कि उनका मजाक उड़ाया जा रहा है? स्पष्ट कीजिए।

उ– सेठानी की बात सुनकर सेठजी को ऐसा इसलिए लगा क्योंकि सेठानी तो त्रिकालदर्शी थी और उन्हें कोई दैवी शक्ति प्राप्त थी जिसके कारण वह सब कुछ जानती थीं। इस समय सेठजी की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी; इसलिए वे यज्ञ बेचकर धन प्राप्त करने के उद्देश्य से आए थे। इसलिए सेठ के मन में अपना मजाक उड़ाए जाने का भाव उत्पन्न हुआ।

ii) 'महायज्ञ' किसे कहते हैं? कहानी के प्रसंगानुसार समझाइए।

उ– महायज्ञ अर्थात् बड़े पैमाने में अत्यधिक धन खर्च करते हुए किये जाने वाला हवन। इसमें अपना वैभव व शक्ति का प्रदर्शन करने का भाव छिपे रहते है। श्रद्धा

और भक्ति का भाव इस आडंबर में छिप-सा जाता है। यहाँ पर सेठानी द्वारा महायज्ञ की बात कहना सेठ को उपहास ही लगता है क्योंकि इस समय उसके लिए गरीबी के कारण अपना पेट तक भरना भी कठिन था तो वह महायज्ञ कैसे कर सकते थे।

iii) ''मेरी स्थिति ही ऐसी नहीं थी।'' सेठ जी ने ऐसा क्यों कहा? कहानी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उ– जब सेठानी जी उसे अपना आज का किया महायज्ञ बेचने को कहती है तो सेठ अपनी स्थिति को स्पष्ट करने के उद्देश्य से ऐसा कहते हैं कि वे आर्थिक रूप से अत्यंत विपन्न हैं। कई वर्षों से वे निर्धनता के कारण यज्ञ करने की स्थिति में नहीं हैं। इसलिए इस समय पहले किए गए यज्ञ को बेचकर धन प्राप्त करने की आशा से उनके पास आए हैं।

iv) इस कहानी के माध्यम से लेखक क्या संदेश देना चाहते हैं? विस्तार से लिखिए।

उ– इस कहानी के माध्यम से लेखक यह संदेश देना चाहते हैं कि धन का दान या यज्ञ करने से ईश्वर प्रसन्न नहीं होते हैं, बल्की निस्वार्थ भाव से सेवा को अपना कर्त्तव्य समझकर करना ही सच्ची सेवा और भक्ति है। जीवों पर दया करना ही मनुष्य का परम कर्त्तव्य है। चाहे उसके लिए स्वयं को भूखा क्यों न रहना पड़े। प्राणिमात्र की सेवा ही नारायण सेवा है तथा जीवों के कष्ट निवारण से ही प्रभु प्रसन्न होते हैं।

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

सुनकर पहले तो सेठ दुखी हुए, पर बाद में अपनी तंगी का विचार करके एक यज्ञ बेचने को तैयार हो गए।

i) सेठ किसकी और कौन-सी बात सुनकर दुखी हुए?

उ– सेठानी के मुँह से यज्ञ बेचने की बात सुनकर सेठ दुखी हुए।

ii) वे यज्ञ बेचने के लिए कहाँ गए? वह स्थान सेठ जी के यहाँ से कितनी दूरी पर था?

उ– वे यज्ञ बेचने के लिए कुंदनपुर नामक नगर में गए। वह स्थान सेठ जी के यहाँ से दस-बारह कोस की दूरी पर था।

iii) कुंदनपुर में कौन रहते थे? उनका नाम क्या था?

उ– कुंदनपुर में बहुत बड़े सेठ रहते थे। लोग उन्हें धन्ना सेठ कहते थे।

iv) उस नगर की सेठानी के बारे में क्या अफ़वाह फैली हुई थी?

उ– उस नगर की सेठानी के बारे में यह अफ़वाह थी कि उन्हें कोई दैवी शक्ति प्राप्त थी। जिससे वह तीन लोकों की बातें जान लेती थी।

नेता जी का चश्मा

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

इसी नगरपालिका के उत्साही बोर्ड या प्रशासनिक अधिकारी ने एक बार 'शहर' के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस की एक संगमरमर की प्रतिमा लगवा दी यह कहानी उसी प्रतिमा के बारे में है, बल्कि उसके भी एक छोटे-से हिस्से के बारे में।

i) हालदार साहब कब और कहाँ-से क्यों गुजरते थे?

उ– हालदार साहब हर पंद्रहवें दिन कंपनी के काम के सिलसिले में एक कस्बे से गुजरते थे। जहाँ बाज़ार के मुख्य चौराहे पर नेताजी की मूर्ति लगी थी।

ii) कस्बे का वर्णन कीजिए।

उ– कस्बा बहुत बड़ा नहीं था। जिसे पक्का मकान कहा जा सके वैसे कुछ ही मकान और जिसे बाज़ार कहा जा सके वैसा एक ही बाज़ार था। कस्बे में एक लड़कों का स्कूल, एक लड़कियों का स्कूल, एक सीमेंट का कारखाना, दो ओपन एयर सिनेमाघर और एक नगरपालिका थी।

iii) नगरपालिका के कार्यों के बारे में बताइए।

उ– उस कस्बे में नगरपालिका थी तो कुछ-न-कुछ करती भी रहती थी। कभी कोई सड़क पक्की करवा दी, कभी कुछ पेशाबघर बनवा दिए, कभी कबूतरों की छतरी बनवा दी तो कभी कवि सम्मलेन करवा दिया।

iv) शहर के मुख्य बाज़ार में प्रतिमा किसने लगवाई थी और उस प्रतिमा की क्या विशेषता थी?

उ– शहर के मुख्य बाज़ार के मुख्य चौराहे पर नगरपालिका के किसी उत्साही बौर्ड या प्रशासनिक अधिकारी ने नेताजी सुभाषचंद्र बोस की एक संगमरमर की प्रतिमा लगवा दी थी। उस मूर्ति की विशेषता यह थी कि मूर्ति संगमरमर की थी। टोपी की नोक से

कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची और सुंदर थी। नेताजी फौजी वर्दी में सुंदर लगते थे। मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो' और तुम मुझे खून दो ... आदि याद आने लगते थे। केवल एक चीज की कसर थी जो देखते ही खटकती थी नेताजी की आँख पर संगमरमर का चश्मा नहीं था बल्कि उसके स्थान पर सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया था।

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

''हालदार साहब को हर पन्द्रहवें दिन कंपनी के काम के सिलसिले में उस कस्बे से गुज़रना पड़ता था।''

i) हालदार साहब जिस कस्बे से गुजरते थे वह कैसा था?

उ– जिस कस्बे से हालदार साहब गुजरते थे वह बहुत बड़ा नहीं था। जिसे पक्का मकान कहा जा सके वैसे कुछ ही मकान और जिसे बाज़ार कहा जा सके वैसा एक ही बाज़ार था। कस्बे में एक स्कूल लड़कों का और दूसरा स्कूल लड़कियों का, सीमेंट का एक छोटा सा कारखाना, दो ओपन एयर सिनेमाघर और एक नगरपालिका भी थी जो कुछ ना कुछ काम कस्बे में करवाती रहती थी।

ii) मुख्य बाजार के मुख्य चौराहे पर किसकी प्रतिमा लगी थी? प्रतिमा बनवाने में क्या दिक्कत आई होगी?

उ– शहर के मुख्य बाज़ार के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस की एक संगमरमर की प्रतिमा लगी हुई थी। लगता था देश के अच्छे मूर्तिकारों की जानकारी ना होने पर या उपलब्ध बजट से ज्यादा खर्च होने के अनुमान में या बोर्ड की शासनावधि समाप्त होने की घड़ियों में किसी स्थानीय कलाकार को ही मौका दिया गया होगा। इन्हीं सब दिक्कतों के बीच मूर्ति का निर्माण किया गया होगा।

iii) मूर्ति कैसी थी और किसने बनाई थी?

उ– नेता जी की मूर्ति संगमरमर की थी। टोपी की नोंक से कोट के दूसरे बटन तक कोई तो फुट ऊँची मूर्ति थी। नेताजी फौजी वर्दी में सुंदर लग रहे थे। मूर्ति को देखते ही उनके जोश-पूर्ण नारे याद आते। ''दिल्ली चलो'' और ''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।'' मूर्ति कस्बे के हाई स्कूल के इकलौते ड्राइंग मास्टर मोतीलाल ने बनाई थी।

iv) मूर्ति में क्या कमी थी?

उ– मूर्ति में एक कमी रह गई थी कि बस नेताजी की आंखों पर चश्मा नहीं था।

Extra Question :

i) कैप्टन चश्मे वाला नेता जी की मूर्ति के चश्मे में उलट फेर क्यों करता था?

उ– पान वाले की बातों के आधार पर मालूम हुआ कि चश्मे वाला अपनी छोटी सी दुकान में से गिने चुने फ्रेमों में से एक फ्रेम नेता जी की मूर्ति पर लगा देता था। जब उसके किसी ग्राहक को नेताजी का पहना हुआ चश्मा पसंद आता तो वह उसको वह फ्रेम उतार कर दे देता और नेता जी की मूर्ति को दूसरा चश्मा पहना देता। शायद उसकी आँखों को नेताजी की बिना चश्मे की मूर्ति भाती नहीं थी।

ii) जब हालदार साहब को मालूम पड़ा कि मूर्ति पर चश्मा क्यों नहीं है तो उन्होंने अगली बार के लिए क्या निश्चय किया?

उ– जब हालदार साहब को मालूम पड़ा कि मूर्ति पर कोई चश्मा नहीं होगा तो अगली बार के लिए उन्होंने यह निश्चय किया कि अगली बार वह उस कस्बे के चौराहे से गुजरेंगे तो नहीं रुकेंगे क्योंकि सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा तो उसी स्थान पर स्थापित होगी पर उनकी आँखों पर चश्मा नहीं होगा। वह मूर्ति की तरफ देखेंगे भी नहीं और सीधे निकल जाएंगे क्योंकि उन्हें इस बात की सच्चाई मालूम पड़ गई थी कि उनकी मूर्ति पर चश्मा ना होने का क्या कारण था। वे स्वयं भी आहत थे।

iii) शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

उ– कहानी के शीर्षक से ही यह बड़ी आसानी से मालूम पड़ता है कि यह कहानी आखिर किसके बारे में है। जैसा कि शीर्षक है, कहानी नेताजी के चश्मे के आसपास ही घूमती रहती है। कभी मूर्ति पर चश्मे का ना होना, कभी दूसरा चश्मा होना, कभी तीसरा चश्मा होना। चश्मा पहनाने का काम एक चश्मे वाला करता है जो कुछ समय बाद नेता जी की मूर्ति में चश्मे बदल देता है। उसकी मृत्यु के बाद यह चश्मे बदलने का सिलसिला बंद हो गया और फिर नेता जी की मूर्ति बिना चश्मे के हो गई। कुछ दिन बाद किसी समझदार व्यक्ति या बच्चे ने नेता जी की मूर्ति के ऊपर सरकंडे का बना हुआ चश्मा पहना दिया। यह कहानी बड़ी रोचक है और चश्मे के बार-बार बदले जाने पर रोचक बनी है। इसलिए शीर्षक पूरी तरह सार्थक है।

अपना - अपना भाग्य

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

मैंने देखा कि कुहरे की सफेदी में कुछ ही हाथ दूर से एक काली-सी मूर्ति हमारी तरफ आ रही थी। मैंने कहा – ''होगा कोई''

i) लेखक किसके साथ कहाँ बैठा था?

उ– लेखक अपने मित्र के साथ नैनीताल में संध्या के समय बहुत देर तक निरुद्देश्य घूमने के बाद एक बेंच पर बैठे थे।

ii) बादलों का लेखक ने कैसा वर्णन किया है?

उ– लेखक अपने मित्र के साथ नैनीताल में संध्या के समय बहुत देर तक निरुद्देश्य घूमने के बाद एक बेंच पर बैठे थे। उस समय संध्या धीरे-धीरे उतर रही थी। रुई के रेशे की तरह बादल लेखक के सिर को छूते हुए निकल रहे थे। हल्के प्रकाश और अँधियारी से रंग कर कभी बादल नीले दिखते, तो कभी सफेद और फिर कभी जरा लाल रंग में बदल जाते।

iii) लेखक ने नैनीताल की उस संध्या में कुहरे की सफेदी में क्या देखा?

उ– लेखक ने उस शाम एक दस-बारह वर्षीय बच्चे को देखा जो नंगे पैर, नंगे सिर और एक मैली कमीज लटकाए चला आ रहा था। उसकी चाल से कुछ भी समझ पाना लेखक को असंभव सा लग रहा था क्योंकि उसके पैर सीधे नहीं पड़ रहे थे। उस बालक का रंग गोरा था परंतु मैल खाने से काला पड़ गया था, आँखें अच्छी, बड़ी पर सूनी थी, माथा ऐसा था जैसे अभी से झुर्रियाँ आ गई हों।

iv) लेखक और मित्र ने उस बालक के विषय में कौन-सी बातें जानी?

उ– नैनीताल की संध्या के समय लेखक और उसके मित्र जब एक बेंच पर बैठे थे तो उनकी मुलाकात एक दस-बारह वर्षीय बालक से होती है। दोनों को आश्चर्य होता है कि इतनी ठंड में यह बालक बाहर क्या कर रहा है। वे उससे तरह-तरह के प्रश्न करते हैं। उससे उन्हें पता चलता है कि वो कोई पास की दुकान पर काम करता था और उसे काम के बदले में एक रूपया और जूठा खाना मिलता था।

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

''अजी ये पहाड़ी बड़े शैतान होते हैं। बच्चे-बच्चे में अवगुण छिपे रहते हैं - आप भी क्या अजीब है उठा लाए कहीं से - लो जी ये नौकर लो।''

i) उपर्युक्त अवतरण में किस की बात की जा रही है?

उ– उपर्युक्त अवतरण में एक दस-बारह वर्षीय पहाड़ी बालक की बात की जा रही है।

ii) प्रस्तुत कथन के वक्ता का परिचय दें।

उ– प्रस्तुत कथन के वक्ता लेखक के वकील मित्र हैं।

iii) लेखक उस बच्चे को वकील साहब के पास क्यों ले गए?

उ– लेखक को रास्ते में एक दस-बारह वर्षीय बालक मिला जिसके पास कोई काम और रहने की जगह नहीं थी। लेखक के एक वकील मित्र थे जिन्हें अपने लिए एक नौकर की आवश्यकता थी इसलिए लेखक उस बच्चे को वकील साहब के पास ले गए।

iv) वकील साहब उस बच्चे को नौकर क्यों नहीं रखना चाहते थे?

उ– वकील साहब उस बच्चे को नौकर इसलिए नहीं रखना चाहते थे क्योंकि वे और लेखक दोनों ही उस बच्चे के बारे में कुछ जानते नहीं थे। साथ ही वकील साहब को यह लगता था कि पहाड़ी बच्चे बड़े शैतान और अवगुणों से भरे होते हैं। यदि उन्होंने किसी ऐरे गैरे को नौकर रख लिया और वह अगले दिन चीजों को लेकर चंपत हो गया तो। इस तरह भविष्य में चोरी की आशंका के कारण वकील साहब ने उस बच्चे को नौकरी पर नहीं रखा।

3. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

पर बतलाने वालों ने बताया कि गरीब के मुँह पर, छाती, मुठ्ठियों और पैरों पर बर्फ की हल्की-सी चादर चिपक गई थी, मानो दुनिया की बेहयाई ढँकने के लिए प्रकृति ने शव के लिए सफ़ेद और ठंडे कफन का प्रबंध कर दिया था।

i) यहाँ पर गरीब किसे और क्यों संबोधित किया गया है?

उ– यहाँ पर गरीब उस पहाड़ी बालक को संबोधित किया गया, जो कल रात ठंड के

कारण मर गया था। उस बालक के कई भाई-बहन थे। पिता के पास कोई काम न था घर में हमेशा भूख पसरी रहती थी इसलिए वह बालक घर से भाग आया था यहाँ आकर भी दिनभर काम के बाद जूठा खाना और एक रूपया ही नसीब होता था।

ii) लड़के की मृत्यु का क्या कारण था?

उ– लड़का अपनी घर की गरीबी से तंग आकर काम की तलाश में नैनीताल भाग कर आया था। यहाँ पर आकर उसे एक दुकान में काम मिल गया था परंतु किसी कारणवश उसका काम छूट जाता है और उसके पास रहने की कोई जगह नहीं रहती है। उस दिन बहुत अधिक ठंड थी और उसके पास कपड़ों के नाम पर एक फटी कमीज थी इसी कारण उसे रात सड़क के किनारे एक पेड़ के नीचे बितानी पड़ी और अत्यधिक ठंड होने के कारण उस लड़के की मृत्यु हो गई।

iii) 'दुनिया की बेहयाई ढँकने के लिए प्रकृति ने शव के लिए सफ़ेद और ठंडे कफ़न का प्रबंध कर दिया था' - इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उ– प्रस्तुत पंक्ति का आशय सामान्य जनमानस की संवेदन-शून्यता और स्वार्थ भावना से है। एक पहाड़ी बालक गरीबी के कारण ठंड से ठिठुरकर मर जाता है। परंतु प्रकृति ने उसके तन पर बर्फ की हल्की चादर बिछाकर मानो उसके लिए कफ़न का इंतजाम कर दिया। जिसे देखकर ऐसा लगता था मानो प्रकृति मनुष्य की बेहयाई को ढँक रही हो।

iv) 'अपना अपना भाग्य' कहानी के उद्देश्य पर विचार कीजिए।

उ– प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य आज के समाज में व्याप्त स्वार्थपरता, संवेदनशून्यता और आर्थिक विषमता को उजागर करना है। आज के समाज में परोपकारिता का अभाव हो गया है। निर्धन की सहायता करने की अपेक्षा सब उसे अपना-अपना भाग्य कहकर मुक्ति पा लेते हैं। हर कोई अपनी सामाजिक जिम्मेदारी से बचना चाहता है। किसी को अन्य के दु:ख से कुछ लेना-देना नहीं होता।

4. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

''पास की चुंगी की लालटेन के छोटे से प्रकाश वृत में देखा कोई दस बारह बरस का लड़का होगा।''

i) बालक कहां से भाग कर आया था और क्यों?

उ– बालक नैनीताल से पंद्रह कोस दूर एक गांव से भाग कर आया था। वहां काम नहीं था और रोटी भी नहीं थी। उसका बाप भूखा रहता था और मारता था। माँ भी भूखी रहती थी और रोती रहती थी। यह लड़का गांव के एक दूसरे लड़के के साथ अपनी रोज़ी-रोटी या पेट भरने के लिए नैनीताल भाग आया।

ii) लेखक और उसके मित्र उस पहाड़ी बालक को किसके पास ले गए और क्यों?

उ– लेखक और उसके मित्र उस पहाड़ी बालक को अपने एक वकील मित्र के पास ले गए। वकील मित्र को एक नौकर की जरूरत थी, अत: ये लोग चाहते थे कि उस गरीब लड़के को काम मिल जाए और उसका कुछ भला हो जाए।

iii) उनके वकील मित्र ने दोनों की बात क्यों नहीं मानी? उसने अपनी बात के समर्थन में क्या-क्या कहा?

उ– वकील मित्र ने लेखक और उसके मित्र की बात नहीं मानी क्योंकि उसका विचार था कि ये पहाड़ी बालक बड़े शैतान होते हैं। बच्चे-बच्चे में अवगुण छिपे रहते हैं। ये लोग घर से चोरी करके भाग जाते हैं। इसी कारण वकील मित्र ने उसको अपने यहां नौकर नहीं रखा।

iv) पहाड़ी बालक की मौत का कारण क्या था?

उ– भूखे पेट रहना और भीषण ठंड में एक पेड़ के नीचे बिना या कम कपड़ों के सोना ही पहाड़ी बालक की मौत का कारण था।

Extra Question : Lesson 5

i) इस कहानी को लेखक ने किस उद्देश्य से लिखा है?

उ– श्री जैनेंद्र कुमार' ने अपना अपना भाग्य कहानी के माध्यम से मानव को उसकी विषम परिस्थितियों के समक्ष कमज़ोर बताया है और इस बात की पुष्टि की है कि मानव परिस्थितियों का दास है और सांसारिक दुख सुख भाग्य-वश होते हैं। कोई भी मनुष्य भाग्य के लिखे को न मिटा सकता है और ना ही आपत्तियों को बांट सकता है।

ii) लड़का कौन था? उसके पास कौन सा उपहार किसने छोड़ा था?

उ– लड़का एक निर्धन पहाड़ी लड़का था। उसके मां-बाप दूर एक गांव में रहते थे। वहाँ पर उनके लिए कोई काम नहीं था। अत: भूखे रहकर उन्हें अपना गुज़ारा

करना पड़ता था, इसलिए वह गाँव से रोज़ी और रोटी की तलाश में नैनीताल भाग आया। किंतु दस वर्ष की अवस्था में ही निष्ठुर काल से उसका सामना हो गया। उसके शरीर पर इस समय काले चिथड़ों की मैली कुचैली कमीज़ और हल्की सी बर्फ की चादर ही शेष रह गई थी। मैली कुचैली कमीज़ और तुषार की हल्की सी चादर ही उसके लिए उपहार थे।

iii) अंत में बालक का क्या हुआ? प्रकृति ने उसके लिए क्या प्रबंध किया?

उ– अंत में वह लड़का भूख और ठंड के प्रकोप से केवल दस वर्ष की आयु में अपनी जीवन यात्रा समाप्त कर गया। प्रकृति ने उस गरीब लड़के के शव को हल्की सी बर्फ़ की चादर से ढक दिया था। लेखक ने बताया है कि प्रकृति ने बर्फ का आवरण उसके नंगे शव को दुनिया की बेहयाई से छिपाने के लिए दिया था।

Lesson – 6. : बड़े घर की बेटी

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

''जिस तरह सूखी लकड़ी जल्दी से जल उठती है उसी तरह क्षुधा से बावला मनुष्य ज़रा ज़रा सी बात पर तुनक जाता है। लाल बिहारी को भावज की यह ढिठाई बहुत बुरी मालूम हुई।

i) लाल बिहारी कौन था? उसे अपनी भावज की कौन सी बात बुरी लगी?

उ– लाल बिहारी बेनीमाधव सिंह का छोटा बेटा और श्रीकंठ का भाई था। एक दिन दोपहर के समय वह दो चिड़ियां पकड़ कर लाया और भावज से उन्हें पकाने को कहा। घर में उपस्थित पाव भर घी को आनंदी ने मांस में डाल दिया। दाल के लिए घी नहीं बचा। भावज ने सब बता दिया कि घी कहाँ गया। लाल बिहारी को भावज की यही बात बहुत बुरी लगी कि उसे ज़रा भी ध्यान नहीं, इस पर वह बहस किए जा रही थी और अपने कार्य को उचित ठहरा रही थी।

ii) भावज की बात सुनकर उसने उस पर क्या व्यंग्य किया?

उ– भावज की बात सुनकर लाल बिहारी ने यह व्यंग्य किया कि उसके मायके में तो जैसे घी की नदियां बहती हैं।

iii) भावज की कौन सी बात उसके लिए असहनीय हो गई और क्यों? देवर की बात सुनकर उसने क्या उत्तर दिया?

उ– भावज के मुँह से मायके की बड़ाई सुनकर कि वहाँ इतना घी नित्य नाई-कहार खा जाते हैं, लाल बिहारी के लिए असहनीय हो गई। भावज को खुद से जुबान लड़ाता देखकर थाली पटकता वह बोला कि जी चाहता है कि उनकी जीभ खींच ले। इस पर भावज ने उत्तर दिया कि ऐसे समय में यदि उसके पति होते तो उसको मज़ा चखा देते।

iv) लाल बिहारी ने अपना गुस्सा किस प्रकार प्रकट किया?

उ– लाल बिहारी ने भावज को खड़ाऊँ दे मारी और यह कहकर आक्रोश प्रकट किया कि जिसके गुमान पर बैठी है वह उनसे निपट लेगा।

Extra Question : Lesson 6

i) आनंदी कौन थी? ठाकुर साहब उसे क्यों चाहते थे?

उ– आनंदी भूप सिंह की चौथी लड़की थी। भूप सिंह उसे बहुत चाहते थे क्योंकि वह अपनी सब बहनों से सुंदर और गुणवती थी।

ii) अंत में दोनों भाइयों का मेल किसने कराया?

उ– अंत में श्री कंठ और लाल बिहारी का मेल श्रीकंठ की पत्नी आनंदी ने कराया। उसने लाल बिहारी को घर छोड़कर जाने से रोक लिया और एक अच्छी नारी होने का फर्ज़ निभाया।

iii) बेनीमाधव सिंह ने आनंदी को बड़े घर की बेटी क्यों कहा?

उ– बेनीमाधव सिंह ने आनंदी को बड़े घर की बेटी इसलिए कहा क्योंकि उसने बिगड़े हुए काम को बना लिया था अर्थात् दोनों भाइयों को एक छोटी सी बात के लिए अपने दिल को कठोर कर एक दूसरे से अलग होने से बचा लिया था।

साखी (कविता)

1. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

गुरु गोबिंद दोऊ, खड़े, काके लागू पायँ।
बलिहारी गुरु आपनो, जिन गोबिंद दियौ बताय।।
जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहि।
प्रेम गली अति साँकरी, तामे दो न समाहि।।

i) कबीर के गुरु के प्रति दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

उ– कबीरदास ने गुरु का स्थान ईश्वर से श्रेष्ठ माना है। कबीर कहते हैं जब गुरु और गोबिंद (भगवान) दोनों एक साथ खड़े हों तो गुरु के श्रीचरणों मे शीश झुकाना उत्तम है जिनके कृपा रुपी प्रसाद से गोबिंद के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुरु ज्ञान प्रदान करते हैं, सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं, मोह-माया से मुक्त कराते हैं।

ii) कबीर के अनुसार कौन परमात्मा से मिलने का रास्ता दिखाते हैं?

उ– कबीर के अनुसार गुरु परमात्मा से मिलने का रास्ता दिखाते हैं।

iii) 'जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाँहि।' - का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

उ– इस पंक्ति द्वारा कबीर कहते हैं कि जब तक यह मानता था कि 'मैं हूँ', तब तक मेरे सामने हरि नहीं थे। और अब हरि आ प्रगटे, तो मैं नहीं रहा। अँधेरा और उजाला एक साथ, एक ही समय, कैसे रह सकते हैं? जब तक मनुष्य में अज्ञान रुपी अंधकार छाया है वह ईश्वर को नहीं पा सकता अर्थात् अहंकार और ईश्वर का साथ-साथ रहना नामुमकिन है। यह भावना दूर होते ही वह ईश्वर को पा लेता है।

iv) यहाँ पर 'मैं' और 'हरि' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है?

उ– यहाँ पर 'मैं' और 'हरि' शब्द का प्रयोग क्रमशः अहंकार और परमात्मा के लिए किया है।

2. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

''जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाही
प्रेम गली अति सांकरी, तामे दो न समाही।''

i) उपर्युक्त साखी में कवि ने 'मैं' तथा 'हरि' शब्द का प्रयोग किनके लिए किया है?

उ– 'मैं' का प्रयोग कवि ने अहं अथवा अहंकार के लिए किया है। अहंकार अर्थात हमारा घमंड और अभिमान। 'हरि' शब्द का प्रयोग ईश्वर अथवा परम ब्रह्म के लिए आया है। जिनकी तुलना अतुलनीय है।

ii) 'जब मैं था तब हरि नहीं' इस पंक्ति में कबीर का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।

उ– कबीरदास जी कहते हैं कि जब तक मेरे मन में अहं की भावना अथवा अहंकार का भाव विद्यमान था तब तक मुझे ईश्वर के दर्शन नहीं हुए क्योंकि ईश्वर उन्हीं लोगों से प्रेम करते हैं जिनका हृदय निर्मल एवं सरल होता है। अभिमानी तथा अहंकारी मनुष्य अपने घमंड में इतना फूला फूला रहता है कि वह ईश्वर के किसी भी रूप को पहचान नहीं पाता। तात्पर्य यह हैं कि जहां अहंकार है वहां ईश्वर का वास हो ही नहीं सकता।

iii) 'अब हरि है' से कवि का क्या तात्पर्य है? कवि के अनुभव को अपने शब्दों में लिजिए।

उ– 'अब हरि है' से कबीर दास जी का तात्पर्य यह है कि अब उनके मन में ईश्वर का वास है जब उनके मन से अहंकार की भावना चली गई। जब उनका मन निर्मल, सरल एवं पवित्र हो गया तब उन्हें ईश्वर की उपस्थिति का आभास अपने मन में होने लगा और उनके मन से अहं भाव के लुप्त हो जाने पर उनके मन में ईश्वर का वास हो गया।

iv) 'प्रेम गली अति सांकरी' कहकर कवि ने क्या स्पष्ट करना चाहा है?

उ– इस पंक्ति के माध्यम से कवि स्पष्ट करना चाहते हैं कि प्रेम का मार्ग अत्यंत संकरा और तंग है। वहां पर अहंकार अथवा अभिमान जैसी दुर्भावना के लिए कोई जगह ही नहीं है। प्रेम की इस गली में ईश्वर तथा अहं एक साथ नहीं समा सकते हैं। ईश्वर की प्राप्ति तभी होगी जब मानव अहंकार की भावना को त्याग देगा। अहंकार एवं ईश्वर कभी भी एक साथ नहीं रह सकते हैं।

Extra Question : Lesson 1

i) कबीर दास जी ने गुरु और गोविंद में से किसे ज्यादा महत्व दिया है?

उ– कवि कहते हैं कि गुरु और भगवान दोनों जब उनके सामने खड़े होते हैं तो वे पहले दुविधा में पड़ जाते हैं लेकिन कुछ समय पश्चात वे समझ पाते हैं और निर्णय लेते हैं कि उन्हें गुरु के ही चरण स्पर्श करने चाहिए। कबीर दास जी के अनुसार गुरु हमारे अज्ञान को मिटाकर ज्ञान का प्रकाश देते हैं जिससे हम भगवान तक पहुंच सकते हैं। अत: अंत में वे गुरु को ही ज्यादा महत्व देते हैं।

ii) कवि को मुसलमानों की कौन सी पूजा पद्धति पसंद नहीं है और क्यों?

उ– कबीर दास जी के अनुसार मुसलमानों के मौलवी मस्जिद पर चढ़कर दिन में पांच बार अज़ान की आवाज लगाते हैं। कबीर के अनुसार अज़ान का अर्थ खुदा को चिल्ला चिल्ला कर याद करना नहीं है। उन्हें खुदा को याद करने का उनका यह तरीका पसंद नहीं है। उनका कहना है कि अज़ान मस्जिद पर चढ़कर चिल्लाकर ही क्यों दी जाती है? क्या खुदा बहरे हैं जो हमारे मन की शांत पुकारें को ना सुन सकें। खुदा तो हमारे मन में बसते हैं। इसलिए चिल्ला चिल्ला कर पुकारने की कोई आवश्यकता नहीं है। अगर हम उन्हें मन में भी पुकारें तो वह सुन सकते हैं।

iii) कवि हिंदुओं की मूर्ति पूजा पर अपने क्या विचार रखते हैं?

उ– कवि हिंदुओं की मूर्ति पूजा को भी एक बाहरी आडंबर बताते हुए यह कहते हैं कि मूर्तियों को पूजने से कोई लाभ नहीं मिलता। कवि को मूर्ति पूजा से चक्की की पूजा करना अधिक उपयोगी लगता है क्योंकि घर में बड़ी चक्की का उपयोग अनाज पीसने के लिए किया जाता है। पिसे हुए अनाज से रोटी बनती है और संसार के लोगों का पेट भरता है। अत: मंदिर में स्थिर बैठी मूर्ति से अच्छी भली तो घर में पड़ी वह चक्की है जो सब लोगों का पेट भरती है। मूर्ति की पूजा व्यर्थ है।

Question Bank - 2019 (Class – IX & X)

साहित्य सागर (पद्य विभाग)

साखी (कविता) – कबीर दास

1. ''गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागु पायँ।
... प्रेम गली अति साँकरी तामे दो न समाहि।''

i) कवि किसके बारे में क्या सोच रहे है?

उ– कवि कबीरदास जी यहाँ सोच रहे हैं कि उनके सामने गुरु और भगवान दोनों खड़े तो वह पहले किसके चरण स्पर्श करेंगे। अन्त में उनका मन स्वीकार करता है कि उन्हें गुरु के चरणों पर सब अर्पण करना चाहिए क्योंकि गुरु ने ही उन्हें ईश्वर तक जाने की राह दिखाई है।

ii) कवि किसके ऊपर न्योछावर हो जाना चाहते हैं तथा क्यों?

उ– कवि अपने गुरु के चरणों में श्रद्धा, प्रेम और भक्ति से अपना सर्वस्व न्योछावर कर देना चाहते हैं क्योंकि गुरु ने ही उन्हें ईश्वर प्राप्ति की राह दिखाई है। अर्थात् गुरु ही अज्ञान को मिटाकर ज्ञान प्राप्ति की राह दिखाते हैं। उनका महत्त्व ईश्वर से भी अधिक है।

iii) ईश्वर का वास कहाँ नहीं होता है? कवि हमें क्या त्यागने की प्रेरणा दे रहे हैं? कवि का संक्षिप्त परिचय देते हुए बताइए।

उ– कबीरदास जी कहते हैं कि जहाँ घमण्ड होता है, अंहकार होता है वहाँ ईश्वर का वास नहीं होता है। कवि हमें अहंकार को त्यागने की प्रेरणा दे रहे हैं क्योंकि जहाँ अहंकार होता है वहाँ ईश्वर नहीं और जहाँ ईश्वर है वहाँ अहंकार नहीं रहता। प्रेम की गली पतली होती है जहाँ दोनों नहीं समा सकते। हिन्दी के संत कवियों में कबीरदास का सर्वोच्च स्थान है। कबीरदास काव्य के निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि हैं। कबीरदास जी पढ़े लिखे नहीं थे। उन्होंनें निराकार ईश्वर की उपासना की।

iv) 'साँकरी' शब्द का क्या अर्थ है? प्रेम गली से कवि का क्या तात्पर्य है? उसमें कौन दों एक साथ नहीं रह सकते हैं? समझाइए।

उ– 'साँकरी' शब्द का अर्थ है तंग या पतली। प्रेम गली से कवि का तात्पर्य है – भगवान का स्थान अर्थात् जहाँ ईश्वर का प्रेम है वहाँ अहंकार के लिए कोई स्थान नहीं। उसमें अर्थात् 'प्रेम गली' इतनी साँकरी है कि ईश्वर और अहंकार दोनों एक साथ नहीं रह सकते। कहने का तात्पर्य यह है कि अहंकारी व्यक्ति कभी ईश्वरीय प्रेम की अनुभूति नहीं कर सकता।

v) अर्थ लिखिए :

गोबिंद	भगवान (श्रीकृष्ण)	पायँ	पैर, चरण
बलिहारी	न्योछावर करना	मैं	अहंकार
साँकरी	तंग	हरि	भगवान
दोऊ	दोनों	काके	किसके
समाहि	समाना		

2. ''काँकर पाथर जोरि कै, मस्जिद लई बनाय।
... ताते ये चाकी भली, पीस खाय संसार।''

i) ''काँकर पाथर .... लई बनाय।'' इस पंक्ति में किस धर्म के लोगों की बात हो रही है और क्यों?

उ– उपर्युक्त पंक्ति में मुसलमान धर्म के लोगों की बात हो रही है क्योंकि वे कंकड़-पत्थर जोडकर मस्जिद बनाकर और नमाज पढ़कर अपने आपको धन्य समझते है तथा सोचते हैं कि खुदा इससे प्रसन्न होते हैं।

ii) यहाँ मुसलमानों की किस बात पर व्यंग्य किया गया है और क्यों?

उ– यहाँ मुसलमानों द्वारा मस्जिद पर चढ़कर दिन में पाँच बार जोर-जोर से अजान देने की बात पर व्यंग किया गया है। उनके अनुसार खुदा बहरा है क्या, जो केवल जोर से बोलने पर ही पुकार सुनता है और शांति से की जाने वाली पुकार को नहीं सुनता है। उनके अनुसार खुदा तो हृदय में रहता है। वह सर्वज्ञ है।

iii) हिन्दु धर्म पर क्या और कैसे व्यंग्य किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

उ– कबीरदास जी ने यहाँ मूर्ति-पूजा का विरोध किया है। उनके अनुसार यदि छोटी-सी मूर्ति को पूजने से ईश्वर प्रसन्न होते हैं तो मैं तो पहाड़ की ही पूजा करुँगा। इससे तो ईश्वर और जल्दी प्रसन्न होंगे। उनके अनुसार मूर्ति से तो चक्की अच्छी है जिसके कारण उससे पीसे अनाज से सबका पेट भरता है। उनके अनुसार मूर्ति पूजा नहीं करनी चाहिए। वे सगुण के स्थान निर्गुण भक्ति के समर्थक है।

iv) अर्थ लिखिए।

काँकर	कंकड़	पाथर	पत्थर
चाकी	चक्की	ताते	उससे
पहार	पहाड़	पाहन	पत्थर

Lesson – 2 : गिरधिर की कुंडलियाँ (गिरिधर कविराय)

1. साई सब संसार में, मतलब का व्यवहार ।
जब लग पैसा गांठ में, तब लग ताको यार ।।
तब लग ताको यार, यार संग ही संग डोले ।
पैसा रहे न पास, यार मुख से नहीं बोले ।।

(क) कवि का नाम बताते हुए लिखिए कि 'मतलब का व्यवहार' से कवि का क्या तात्पर्य है?

उ– प्रस्तुत कुंडलियों के कवि का नाम श्री गिरिधर कविराय है। कवि ने कहा है कि जहाँ पर लोग केवल अपने मतलब के लिए मित्रता करते हैं तथा अपना स्वार्थ सिद्ध हो जाने पर

अर्थात् मतलब निकल जाने पर रिश्ता तोड़ लेते हैं। ऐसे व्यवहार को मतलब का व्यवहार कहते हैं। कवि ने ऐसा इसलिए कहा है कि संसार में ज्यादातर ऐसा ही होता है। कवि ने अपने जीवन के अनुभव को इन पंक्तियों में व्यक्त किया है।

(ख) कवि के अनुसार लोग किसे मित्र बनाना चाहते हैं और क्यों?

उ– कवि के अनुसार इस संसार में अधिकतर लोग धनवान व्यक्तियों को मित्र बनाना चाहते हैं। निर्धन लोगों के समीप तक भी कोई जाना नहीं चाहता। धनी लोगों से मित्रता करने पर उन्हें हर तरह से लाभ होता है तथा उनके सभी स्वार्थ सिद्ध होते हैं। अत: वे धनी व्यक्तियों से ही मित्रता करना चाहते हैं। वह सोचते हैं कि निर्धनों से मित्रता करके उन्हें कोई लाभ नहीं होगा।

(ग) 'जगत यही लेखा भाई' इस पंक्ति से कवि का क्या आशय है? समझा कर लिखिए।

उ– इस पंक्ति के द्वारा कवि कहना चाहते हैं कि इस संसार की यही रीति है, यही चलन है अर्थात् इस संसार में यही चला आ रहा है कि लोग रुपए पैसे वालों से रिश्ता जोड़ते हैं, उनसे मित्रता करते हैं और गरीबों से कतराते हैं। धनी लोगों के बहुत मित्र बन जाते हैं पर निर्धन लोगों का कोई भी नहीं होता। कवि कहते हैं कि इस संसार में सभी लोग केवल अपने स्वार्थ, अपने मतलब के लिए मित्रता का ढोंग या दिखावा करते हैं। नि:स्वार्थ मित्रता करने वाले लोग इस संसार में बहुत कम (विरले) ही होते हैं।

(घ) इन पंक्तियों में निहित संदेश को अपने शब्दों में लिखिए।

उ– इन पंक्तियों में छिपा हुआ संदेश बहुत ही उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है। यह बात सही है कि इस संसार में सभी रिश्ते मतलब एवं स्वार्थ पर आधारित होते हैं। लोग अपने मतलब के लिए मित्रता का दिखावा करते हैं, काम निकालने के लिए दोस्ती का हाथ बढ़ाते हैं और स्वार्थ सिद्ध हो जाने पर मुँह मोड़ लेते हैं। हमें ऐसे स्वार्थ पूर्ण रिश्ते की पहचान करते हुए किसी के बहकावे में नहीं आना चाहिए और ना ही किसी का फ़ायदा उठाना चाहिए। साथ ही हमें यह भी समझना चाहिए कि मित्रता में कोई भी अमीर अथवा गरीब नहीं होता। मित्रता एक बहुत पवित्र तथा महान रिश्ता होता है। कृष्ण सुदामा की मैत्री का प्रसंग पढ़कर हमें सच्ची मित्रता की महानता का ज्ञान होता है।

Extra Questions, Lesson-2 (Giridhar Ki Kundaliyan)

1. कवि सब हथियार छोड़कर लाठी लेने की बात क्यों कर रह हैं? अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उ– कवि सब हथियार छोड़कर लाठी लेने की बात इसलिए कर रहे हैं क्योंकि लाठी एक ऐसा उपकरण है जो कि ना केवल एक हथियार है बल्कि अन्य अनेक व्यवधानों को दूर करने में भी सहायक होता है। जबकि अन्य हथियार जैसे, चाकू तलवार आदि केवल आत्मरक्षा के लिए ही काम आ सकते हैं। इस प्रकार यात्रा के समय अपने साथ रखने के लिए लाठी एक बहुत उपयोगी वस्तु है।

2. कमरी के कौन-कौन से उपयोग कवि ने बताए हैं?

उ– कमरी अर्थात् कंबल दिखने में साधारण और सस्ता होता है परंतु यह बहुत उपयोगी होता है। यात्रा के दौरान तथा घर में भी बहुत काम आता है। व्यक्ति की इज्जत बनाए रखता है। कीमती वस्तुओं को सुरक्षित रखता है। इसकी बड़ी गठरी बनाकर उसमें सामान बाँध कर ले जाया जा सकता है। रात को कहीं बिछाकर सो भी सकते हैं। इस प्रकार देखने में यह साधारण सा कंबल बहुत ही उपयोगी होता है।

3. कौवे तथा कोयल का उदाहरण देकर कवि क्या समझाना चाहते हैं?

उ– कौवे तथा कोयल का उदाहरण देकर कवि यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि संसार में व्यक्ति रुप रंग से नहीं, बल्कि गुणों के कारण प्रिय होते हैं और सम्मान पाते हैं। कोयल तथा कौवा दोनों दिखने में बिलकुल एक जैसे ही लगते हैं लेकिन कोयल अपनी मधुर वाणी के कारण सबको अच्छी लगती है। इसके विपरीत कौवे की कर्कश वाणी को सुनकर सब उसे अपशगुन समझते हैं तथा उसे उड़ा देते हैं।

1. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

''लाठी में गुण बहुत हैं, सदा राखिए संग। .....
... सब हथियार न छाँड़ि, हाथ महँ लीजे लाठी।

i) इस कुंडली में किसकी उपयोगिता बताई गई है, कवि ने किस समय मनुष्य को लाठी रखने का परामर्श दिया है?

उ– प्रस्तुत कुंडली में कवि ने लाठी की उपयोगिता बताई है। लाठी को बहुत गुणकारी बताते हुए उसे रात-दिन अपने साथ रखने को कहा है, यदि कहीं जा रहे हैं तो कवि ने सलाह दी है कि सदैव लाठी को अपने साथ रखो।

ii) लाठी हमारे शरीर की सुरक्षा किस प्रकार करती है?

उ– लाठी का व्यक्ति के जीवन में बहुत महत्त्व है। यदि कोई गड्ढा, नदी और नाला मार्ग में पड़ जाए तो लाठी के सहारे हम कूदकर नदी-नाले को पार कर सकते हैं। लाठी दुश्मन से तथा जंगल में जंगली जानवरों से हमारी रक्षा करती है।

iii) लाठी किन तीनों से निपटने में सहायक होती है और किस प्रकार?

उ– कवि का कथन है कि मार्ग में यदि कोई नदी और नाला पड़ जाए तो लाठी के सहारे हम कूदकर उसे पार कर सकते हैं। यदि रास्ते में कोई दुश्मन मिल जाए तो लाठी से उससे लड़कर उसे हरा सकते हैं। लाठी जंगल में जंगली जानवरों से और कुत्ते से हमारी रक्षा करती है। इस प्रकार लाठी हमारे लिए एक मजबूत हथियार की तरह तीनों से निपटने में हमारी सहायक होती है।

iv) अपने विचार व्यक्त करते हुए कवि के कुंडलियाँ लेखन का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उ– कवि के कुंडलियाँ लेखन का उद्देश्य मानव जीवन के व्यावहारिक पक्ष को उजागर करता है। व्यवहारिक जीवन की सच्चाई एवं लोगों के व्यवहार का यथार्थ ज्ञान करना है। एक साधारण और गरीब व्यक्ति के लिए मार्ग में लाठी और कंबल भी सहायक होती है। किसी व्यक्ति के रूप रंग को देखकर किसी के गुणों की परख नहीं करनी चाहिए। अपनी मधुर वाणी से सबको प्रिय बनाया जा सकता है। स्वार्थी लोगों से हमेशा सावधान रहना चाहिए। ऐसे लोग पैसा रहने तक ही हमारे आगे-पीछे घूमते रहते हैं। यही संसार की रीति है जो स्वार्थ पूरा हो जाने पर मुँह फेर लेते हैं। कवि ने कमजोर वृक्ष या कमजोर लोगों की शरण लेने से मना किया है क्योंकि इससे हानि हो सकती है। कवि परोपकार के लिए सर्वस्व बलिदान की बात करते है। अन्तिम कुंडली में कवि ने व्यावहारिकता का ज्ञान देते हुए समय और अवसर देखकर काम करने को कहा है।

2. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

''साँई सब संसार में, मतलब का व्यवहार।
... करत बेगरजी प्रीति, यार बिरला कोई साँई।।''

i) कवि के अनुसार संसार में लोग कैसा व्यवहार करते हैं और क्यों?

उ– कवि के अनुसार संसार में लोग मतलबी अर्थात् स्वार्थी हो गए हैं। उनके लिए अपना हित सर्वोपरि होता है। वे आप भला तो जग भला पर ही चलते हैं।

ii) रुपया-पैसा होने पर तथा न होने पर लोगों के व्यवहार में क्या-क्या परिवर्तन आता है?

उ– रुपया-पैसा पास में होने पर सब मित्र बनना चाहते हैं। अपरिचित भी किसी-न-किसी प्रकार संबंध स्थापित करना चाहते हैं, परन्तु जैसे ही पैसा समाप्त हो जाता है लोगों का व्यवहार एकदम विपरीत हो जाता है। वे पहचानना तक बन्द कर देते हैं। बात करना तो दूर की बात है।

iii) 'विरला' शब्द का प्रयोग यहाँ क्यों किया गया हैं? कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उ– 'विरला' शब्द का शाब्दिक अर्थ है कोई-कोई। यहाँ इस शब्द का प्रयोग नि:स्वार्थी मित्र के लिए किया गया है।आजकल नि:स्वार्थी मित्र का मिलना अत्यन्त कठिन है। सभी लोग स्वार्थी हो गए है और वे स्वार्थवश ही मित्रता करते हैं। उनमें किसी के प्रति प्रेम और दया का भाव अब नहीं रह गया है।

iv) इस कुंडली में निहित संदेश स्पष्ट कीजिए।

उ– गिरिधर कविराय जी का आशय यह है कि सारा संसार अब स्वार्थी लोगों से भर गया है। यहाँ केवल लोग स्वार्थवश ही किसी से मित्रता या संबंध स्थापित करते हैं। जब व्यक्ति के पास धन नहीं रहता या वह मदद करने योग्य नहीं रहता तो लोग बात करना तो दूर उसे पहचानते भी नहीं है। वे दूसरे का केवल उपयोग करना चाहते हैं। दु:ख-सुख में काम नहीं आते। यह संपूर्ण संसार मतलबी है। हमें मतलबी लोगों से सदैव सावधान रहना चाहिए।

Lesson – 3 : स्वर्ग बना सकते हैं

1. ''उसे भूल व फंसा परस्पर ही शंका में भय में,
लगा हुआ केवल अपने में और भोग संचय में''।।

(क) उसे भूल से क्या तात्पर्य है? कौन किसे भूल गया है और क्यों?

उ– ''उसे भूल से कवि का तात्पर्य है कि आज मानव इस बात को भूल गया है कि सच्चा सुख आपसी प्रेम, सद्भावना एवं संतोषप्रद जीवन बिताने में है। वह स्नेह-प्रेम, विश्वबंधुत्सव की सद्भावना को भूलता जा रहा है। आज का मानव इन सब बातों को स्वार्थवश भूल गया है। वह अब केवल अपना सुख देखना चाहता है। लालच में अँधा होकर वह केवल अकेले ही सभी सुखों का उपभोग करने की कामना कर रहा है।

(ख) कवि के अनुसार आज मनुष्य किस प्रकार का जीवन व्यतीत कर रहा है?

उ– कवि के अनुसार आज का मानव बहुत ही स्वार्थपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा है। वह आपस में अनेक मतभेद पैदा करते हुए बैमनस्य तथा शत्रुता को बढ़ावा दे रहा है। अपनी उन्नति तथा सुखों को लेकर उसका मन सदैव आशंकाओं से घिरा रहता है। अधिक से अधिक सुखों को पाने की चाह में यथार्थ में वह मन ही मन दुखी एवं तनावग्रस्त रहता है। दुनिया भर के सुख साधनों तथा ऐश्वर्य की खोज में लगा हुआ वह उन्हें भविष्य के लिए भी संचित कर लेना चाहता है। इस मृग-मरीचिका के पीछे भटकते हुए संघर्ष करता है, अशांत रहता है तथा उसका जीवन कभी भी सुखी नहीं रह पाता।

(ग) बताइए कि आपके विचार में जीवन में सच्चा सुख किस प्रकार मिल सकता है?

उ– जीवन में सच्चा सुख पाने के लिए हमें अपने विचारों में उदारता लानी होगी। इसके लिए हमें केवल अपने विषय में ना सोच कर दूसरों के बारे में भी विचार करना होगा। जीवन में सच्चा सुख तभी आ सकता है जब हम में आत्म संतोष होगा, जब हम स्वार्थ तथा लालच की दुर्भावना का त्याग करते हुए सबको साथ लेकर चलेंगे। यह बात सच है कि स्वयं त्याग करते हुए जब हम दूसरों के भले के अच्छे काम करते हैं तब हमें आत्मसंतुष्टि मिलती है। संसार में ऐसे महामानव की भी कमी नहीं है जो कि दूसरे की भलाई के लिए अपना जीवन उत्सर्ग कर देते हैं। देखा जाए तो सच्चा सुख आत्म संतोष, परोपकार, त्याग तथा परस्प प्रेम भावना के साथ जीवन बिताने में ही है।

(घ) कविता का नाम बताते हुए कवि का जीवन परिचय संक्षेप में लिखिए।

उ– कविता का नाम है – 'स्वर्ग बना सकते हैं'। इसके कवि श्री रामधारी सिंह दिनकर जी का जन्म सन 1908 में बिहार प्रांत के मुंगेर जिले में हुआ था। अपने शैक्षिक काल में ही अनके प्रतिभाओं का परिचय देते हुए उन्होंने बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। कालांतर में इन्होंने सब रेजिस्ट्रार तथा महाविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष के पद पर कार्य किया। वे भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे। उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण की उपाधि से सम्मानित किया गया। यह राज्यसभा के

सदस्य भी रहे। प्रसिद्ध काव्य ग्रंथ उर्वशी पर उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। इनकी रचनाओं में राष्ट्रीयता एवं भारतीय संस्कृति की छवि देखने को मिलती है। सन 1974 में उनका निधन हो गया।

Extra Questions, Lesson-3 (Swarg Bana Sakte Hain)

1. 'स्वर्ग बना सकते हैं' कविता का केंन्द्रीय भाव लिखिए ।

उ– स्वर्ग बना सकते हैं कविता का यह अंश कवि श्री रामधारी सिंह दिनकर जी की सुप्रसिद्ध रचना 'कुरुक्षेत्र' से अवतरित है। इसके अंतर्गत भीष्म पितामह द्वारा धर्मराज युधिष्ठिर को दिया गया उनका अंतिम उपदेश निहित है। शर शैया पर लेटे हुए पितामह ने अनेक प्रकार के हितोपदेश देते हुए युधिष्ठिर से कहा कि हे धर्मराज! यह धरती किसी को खरीदी हुई दासी नहीं है। सभी प्राणियों का इस पर समान अधिकार है। प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं की सभी लोगों को समान आवश्यकता है। अत: बिना किसी भेदभाव के नि:स्वार्थ भावना से सभी को मिलजुलकर वस्तुओं का उपयोग करना चाहिए। जब तक सभी मनुष्यों को न्यायोचित सुख नहीं मिलेगा, तब तक अनंत काल से चला आ रहा संघर्ष भी कम नहीं होगा। एक साथ मिलकर समान रूप से सुखों का उपभोग करते हुए इस धरती को स्वर्ग बनाया जा सकता है।

2. कोलाहल तथा संघर्ष शब्दों का प्रयोग कवि ने किस संदर्भ में किया है? बताइए।

उ– कोलाहल का अर्थ है 'शोरगुल' तथा संघर्ष का अर्थ है 'लड़ाई'। यहाँ पर कोलाहल शब्द से तात्पर्य अशांति, लड़ाई झगड़ा तथा तनावपूर्ण वातावरण से उत्पन्न हंगामे से है। हम सब आपस में संघर्ष करते हुए एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ में व्यस्त रहते हैं। अपनी उन्नति पाने के लिए दूसरों को पीछे धकेल देना चाहते हैं। मानव मात्र में आपसी मतभेद, कलह तथा शत्रुता से उत्पन्न अशांति को कवि ने कोलाहल कहा है तथा आपस में बढ़ रही शत्रुता के फलस्वरूप बढ़ रहे लड़ाई झगड़े को कवि ने संघर्ष का नाम दिया है।

3. 'सब हो सकते तुष्ट' से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए।

उ– 'सब हो सकते तुष्ट' से तात्पर्य है कि सभी लोग संतुष्ट हो सकते है। अर्थात् कवि कहना चाहते हैं कि यदि संसार में सभी मानव परस्पर मिल बांटकर समान रूप से

ईश्वर प्रदत्त वैभव के साधनों का उपयोग करें तो सभी मनुष्य उपभोग भी कर सकते हैं और संतुष्ट होकर सुखी जीवन भी बिता सकते हैं।

1. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

''न्यायोचित सुख सुलभ नहीं .....
..... संघर्ष नहीं कम होगा।''

i) 'भव' शब्द का क्या अर्थ है? कवि के अनुसार इस भव में शान्ति क्यों नहीं है?

उ– 'भव' शब्द का अर्थ है – संसार। कवि के अनुसार इस संसार में शान्ति न होने का कारण है – न्यायोचित सुखों का सुलभ न होना और उनका असमान बँटवारा होना। जब तक संसार में न्यायोचित सुख बराबर - बराबर नहीं होंगे, शान्ति स्थापित नहीं की जा सकती।

ii) अर्थ लिखिए

न्यायोचित = न्याय के अनुसार उचित सम = समान
सुलभ = आसानी से प्राप्त कोलाहल = शोर

iii) 'शमित न होना कोलाहल संघर्ष नहीं कम होगा' – पंक्ति का भावार्थ लिखिए।

उ– कवि कहते हैं कि भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को उपदेश देते हुए कहा कि जब तक सभी मनुष्यों को समान रुप से प्रकृति के सभी संसाधन उपलब्ध नहीं होगे, जब तक समानता के आधार पर सबको समान अधिकार नहीं मिलेंगे तब तक संघर्ष की समाप्ति नहीं हो सकती। जब सभी मनुष्यों को सुख प्राप्त करने के समान अधिकार मिलेंगे तभी कोलाहल समाप्त होगा।

iv) उपर्युक्त पंक्तियाँ 'दिनकर जी' की किस प्रसिद्ध रचना से ली गई है? कविता का केन्द्रीय भाव लिखते हुए बताइए।

उ– उपर्युक्त पंक्तियाँ 'दिनकर जी' की प्रसिद्ध रचना 'कुरुक्षेत्र' से ली गई है। कविता 'स्वर्ग बना सकते हैं' द्वारा कवि ने बताया है कि इस धरती पर सभी का जन्म समान रूप में हुआ है। ईश्वर ने हमें बनाया और साथ ही यह धरती, हवा, प्रकाश सब बनाए एवं उपभोग हेतु दिए। परन्तु मनुष्य लोभवश उन पर अधिकार जमाता रहा। इससे समाज में भेद-भाव बढ़ा। कवि ने माना है कि धरती पर इतनी सामग्री और प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध हैं कि हम सब उसका मिल-बाँट कर

उपयोग करें तब भी वह समाप्त नहीं होगी। सबको समान अधिकार मिले तो यह धरती पलभर में स्वर्ग बन जाएगी।

2. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

''अब तक मनुज-मनुज का यह .....
और भोग-संचय में।''

i) ''सुख भाग नहीं सम होगा।'' – आशय स्पष्ट कीजिए।

उ– यह धरती सबकी माँ है और उससे प्राप्त होने वाले सभी प्राकृतिक संसाधनों पर उसकी संतान होने के कारण सबका बराबर का अधिकार है। उससे जिन सुखों की प्राप्ति हो रही है, उन सुखों का समान रूप से विभाजन होना चाहिए। तभी शोर और संघर्ष समाप्त होगा।

ii) कोलाहल और संघर्ष कब शान्त होगा?

उ– कोलाहल अर्थात् शोर तथा संघर्ष अर्थात् आपस में जूझना यह तभी शान्त होगा जब प्रकृति द्वारा उपलब्ध साधनों का बँटवारा समान रूप से किया जाएगा। किसी प्रकार का भी भेदभाव या पक्षपात नहीं किया जाएगा। जब सब मिलजुल कर समान रूप से उसका उपयोग करेंगे, तभी शांति होगी और संघर्ष समाप्त होगा।

iii) किस भूल के कारण संघर्ष हो रहे हैं?

उ– मनुष्य स्वार्थ के कारण केवल अपने विषय में ही सोच रहा है। उसे सदैव डर रहता है कि जो मेरे पास है उसे कोई दीन न ले ले इसलिए एक-दूसरे पर ही संदेह करते रहते हैं जिसके कारण आपस में प्रेम की जगह शत्रुता का भाव आ जाता है, जो कि नहीं होना चाहिए। सभी को मिलजुल कर प्रेमपूर्वक रहना चाहिए।

iv) भोग और संचय का क्या दुष्परिणाम हुआ है?

उ– भोग और संचय की भावना के कारण असमानता उत्पन्न हो रही है। स्वार्थवश वस्तुओं का स्वयं ज्यादा-से ज्यादा संचयकर केवल स्वयं ही उनका उपयोग करने के कारण ही समाज में प्रेम और एकता स्थापित नहीं हो पा रही है।

वह जन्मभूमि मेरी (कविता)

1. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

वह जन्मभूमि मेरी, वह मातृभूमि मेरी।
ऊँचा खड़ा हिमालय आकाश चूमता है,
नीचे चरण तले झुक, नित सिंधु झूमता है।
गंगा यमुना त्रिवेणी नदियाँ लहर रही है
जगमग छटा निराली पग-पग छहर रही है।
वह पुण्य भूमि मेरी, वह स्वर्ण भूमि मेरी।

i) कवि किस भूमि की बात कर रहा है?

उ– कवि अपनी जन्मभूमि भारतमाता की बात कर रहा है।

ii) कवि ने हिमालय के बारे में क्या कहा है?

उ– कवि कहते हैं कि हिमालय इतना ऊँचा है मानो आसमान को चूम रहा है। वह हमारे भारत की रक्षा करता है।

iii) त्रिवेणी नदियों के नाम लिखिए।

उ– गंगा, यमुना और सरस्वती त्रिवेणी नदियाँ है।

iv) शब्दार्थ लिखिए :

मातृभूमि, सिंधु, नित, पुण्य भूमि

उ–

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
मातृभूमि	=	जन्मभूमि	सिंधु	=	समुद्र
नित	=	हमेशा	पुण्य भूमि	=	जहाँ सभी पुण्य करते हैं।

2. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

वह जन्मभूमि मेरी, वह मातृभूमि मेरी।
झरने अनेक झरते जिसकी पहाड़ियों मे,
चिड़ियाँ चहक रही है, हो मस्त झाड़ियों मे।
अमराइयाँ घनी हैं कोयल पुकारती है,
बहती मलय पवन है, तन मन सँवारती है
वह धर्मभूमि मेरी, वह कर्मभूमि मेरी।

i) कवि ने भारत के लिए किन-किन विशेषणों का प्रयोग किया है?

उ– कवि ने भारत के लिए जन्मभूमि, मातृभूमि, धर्मभूमि तथा कर्मभूमि विशेषणों का प्रयोग किया है।

ii) झरने कहाँ झरते हैं?

उ– झरने भारत माता की पवित्र पहाड़ियों पर झरते हैं।

iii) भारत की हवा कैसी है? उसका हम पर क्या प्रभाव होता है?

उ– भारत में बहने वाली हवा सुगंधित है। यह हमारे तन-मन को सँवारती है।

iv) शब्दार्थ लिखिए :

अमराइयाँ, मलय, पवन, तन

उ–

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
अमराइयाँ	=	आम के पेड़ों के बाग	तन	=	शरीर
मलय	=	पर्वत का नाम	पवन	=	हवा

Lesson - 4 : वह जन्मभूमि मेरी

1. ''गंगा, यमुना, त्रिवेणी, नदियाँ लहर रही हैं, जगमग छटा निराली पग पग पर छहर रही है। वह पुण्य भूमि मेरी, वह स्वर्ण भूमि मेरी''।

(क) उपयुक्त पंक्तियों में किस के विषय में बात की जा रही है? कवि के शब्दों में वर्णन कीजिए ।

उ– उपयुक्त पंक्तियों में कवि अपने देश भारतवर्ष के विषय में बात कर रहे हैं। कवि कह रहे हैं कि मेरे देश में गंगा-यमुना जैसी अनेक पवित्र नदियाँ बहती हैं। गंगा, यमुना, सरस्वती का संगम त्रिवेणी (प्रयागराज) भी यहीं पर स्थित है। इन नदियों की अथाह जल राशि कदम कदम पर सबका ध्यान आकर्षित करती है।

(ख) पुण्यभूमि तथा स्वर्ण भूमि शब्दों का आशय समझाते हुए बताइए कि यहाँ पर कवि ने इन शब्दों का प्रयोग किस संदर्भ में किया है?

उ– 'पुण्यभूमि' अर्थात् पवित्र धरती। 'स्वर्णभूमि' अर्थात् सोने की धरती। धन संपदा से सम्पन्न भूमि। यहाँ पर कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी ने अपनी जन्मभूमि भारत को पुण्यभूमि कहकर संबोधित किया है क्योंकि अपनी महानता के कारण यह धरती

किसी तीर्थ से कम नहीं है। स्वर्णभूमि कहकर कवि यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि असीम प्राकृतिक सौंदर्य तथा अगाध धन संपदा से भरपूर हमारा देश सोने की धरती कहलाने के योग्य है।

(ग) कविता का शीर्षक बताते हुए लिखिए कि इस कविता के द्वारा कवि ने हमें क्या संदेश दिया है?

उ– प्रस्तुत कविता वह जन्मभूमि मेरी प्रख्यात कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी जी की देश प्रेम पर आधारित भावपूर्ण कविता है। इसके द्वारा कवि हमें संदेश देना चाहते हैं कि हमें अपनी जन्मभूमि का सम्मान करना चाहिए। जिस देश की धरती पर हमने जन्म लिया है वह माँ के समान आदरणीय एवं सम्मान के योग्य है क्योंकि हम उसकी गोद में जन्म लेकर पले बढ़े हैं और वह प्राकृतिक वातावरण, फल-फूल आदि देकर हमारा पालन-पोषण करती है। हम अपना संपूर्ण जीवन उसी भूमि पर बिताते हैं और अंत में भी वही हमें अपने आप में समाहित कर लेती है। अत: हर एक भारतीय को अपने देश से प्रमे करते हुए उसके सम्मान एवं मान मर्यादा की रक्षा करनी चाहिए।

(घ) बताइए कि वर्तमान समय में यह कविता कहाँ तक सार्थक एवं उपयोगी है।

उ– साहित्य की कोई भी विधा चाहे कविता हो या कहानी, उपन्यास, नाटक हर युग एवं हर समय के लिए उपयोगी तथा सार्थक होती है। इस कविता का महत्त्व आज के आपा-धापी के समय में और भी बढ़ जाता है क्योंकि आज समय तेजी से बदल रहा है। इस बदलते परिवेश में बच्चों तथा युवाओं के मन में देश भक्ति, देश प्रेम जैसी भावनाओं के लिए कोई विशेष स्थान नहीं है क्योंकि इन सब विषयों में उनकी कोई रुचि दिखाई नहीं देती है और ना ही उन्हें इस विषय में के बारे में गंभीरता से बताया जाता है। प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति भी बच्चों तथा युवा पीढ़ी का आकर्षण कम होता जा रहा है। आधुनिक सुख-सुविधाओं में व्यस्त इन सबके लिए समय ही नहीं है। ऐसी स्थिति को ध्यान में रखते हुए युवाओं को इस प्रकार की कविताएँ समझाएँ तो निश्चित रूप से उनके मस्तिष्क में देशप्रेम उत्पन्न होगा।

Extra Questions, Lesson-4 (Waha Janmabhumi Meri)

1. मलय पवन से क्या तात्पर्य है? वह हमें किस प्रकार प्रभावित करती है? स्पष्ट कीजिए ।

उ– मलय पवन से तात्पर्य है चंदन की भीनी भीनी सुगंध से युक्त शीतल एवं सुगंधित वायु। हमारे देश में दक्षिण की ओर मलय पर्वत स्थित है। वहाँ पर चंदन के वृक्षों की अधिकता है। उन पर्वतों से चलने वाली हवा इसीलिए सुगंधित एवं शीतल होती है। जब मलय पवन उत्तर की ओर वातावरण में बहती है तो हमारे शरीर एवं मन को आनंद तथा स्फूर्ति से भर देती है। हमारा तन मन स्वस्थ एवं प्रसन्न हो जाता है।

2. कवि किसे 'धर्मभूमि' तथा 'कर्मभूमि' कहकर संबोधित कर रहे हैं और क्यों?

उ– 'धर्मभूमि' तथा 'कर्मभूमि' कहकर कवि ने अपनी जन्मभूमि भारतवर्ष को संबोधित किया है। हमारे देश में अनेक धर्मो को आश्रय मिला है। हमारा धर्म एवं हमारी संस्कृति सनातन है। भारत भूमि हर व्यक्ति को अपने धर्म का पालन करने तथा धर्म के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है। इसलिए यह हमारी जन्मभूमि है। इस भूमि की सेवा करना हमारा धर्म है। कर्मभूमि इसलिए कहा गया है कि हमारे देश की संस्कृति कर्म प्रधान है। वेदों, पुराणों तथा सभी ग्रन्थो में कर्म को अधिक महत्त्व दिया गया है। हमारी भूमि इस कर्म प्रधान संसार में निरंतर कर्म करने के लिए प्रेरित करती है और हमारे जन्म के पश्चात इसी जन्म भूमि पर हमें कर्म करने का मौका भी देती है।

3. 'बुद्धभूमि' से कवि का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए ।

उ– 'बुद्धिभूमि' से कवि का आशय हमारे देश की धरती पर ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले गौतम बुद्ध से है। गौतम बुद्ध को लंबे समय तक बोधि-वृक्ष (गया) के नीचे तपस्या करने के उपरांत ज्ञान प्राप्त हुआ था और वे महत्मा बुद्ध कहलाए। उनके अनुयायी हमारे देश में ही नहीं बल्कि विश्व के अन्य देशों में भी पाए जाते हैं। उन्होंने हिंसा न करने तथा सभी जीवों पर दया करने का उपदेश दिया था।

मेघ आए (कविता)

1. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

मेघ आये बड़े बन-ठन के, सँवर के।
आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली
दरवाजे-खिड़कियाँ खुलने लगी गली-गली
पाहुन ज्यों आये हो गाव में शहर के।
पेड झुक झाँकने लगे गरदन उचकाये
आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाये
बाँकी चितवन उठा नदी, ठिठकी, घूँघट सरकाए।

i) मेघ रूपी मेहमान के आने से वातावरण में क्या परिवर्तन हुए?

उ– मेघ रूपी मेहमान के आने से हवा के तेज बहाव के कारण आँधी चलने लगती है जिससे पेड़ कभी झुक जाते हैं तो कभी उठ जाते हैं। दरवाजे खिड़कियाँ खुल जाती है। नदी बाँकी होकर बहने लगती है। पीपल का वृक्ष भी झुकने लगता है, तालाब के पानी में उथल-पुथल लगती है, अंत में आसमान से वर्षा होने लगती है।

ii) 'बाँकी चितवन उठा, नदीं ठिठकी, घूँघट सरकाए।' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उ– उपर्युक्त पंक्ति का भाव यह है कि मेघ के आने का प्रभाव सभी पर पड़ा है। नदी ठिठककर कर जब ऊपर देखने की चेष्टा करती है तो उसका घूँघट सरक जाता है और वह तिरछी नज़र से आए हुए आंगतुक को देखने लगती है।

iii) मेघों के लिए 'बन-ठन के, सँवर के' आने की बात क्यों कही गई है?

उ– कवि ने मेघों में सजीवता लाने के लिए बन ठन की बात की है। जब हम किसी के घर बहुत दिनों के बाद जाते हैं तो बन सँवरकर जाते हैं ठीक उसी प्रकार मेघ भी बहुत दिनों बाद आए हैं क्योंकि उन्हें बनने सँवरने में देर हो गई थी।

2. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

बूढ़े पीपल ने आगे बढ़ कर जुहार की
'बरस बाद सुधि लीन्ही'
बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की

हरसाया ताल लाया पानी परात भर के।
क्षितिज अटारी गहराई दामिनि दमकी
'क्षमा करो गाँठ खुल गयी अब भरम की'
बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके
मेघ आये बड़े बन-ठन के, सँवर के।

i) 'क्षितिज अटारी गहराई दामिनी दमकी, क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की' – पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उ– उपर्युक्त पंक्ति का आशय यह है कि नायिका को यह भ्रम था कि उसके प्रिय अर्थात मेघ नहीं आएँगे परन्तु बादल रूपी नायक के आने से उसकी सारी शंकाएँ मिट जाती है और वह क्षमा याचना करने लगती है।

ii) लता ने बादल रूपी मेहमान को किस तरह देखा और क्यों?

उ– लता ने बादल रूपी मेहमान को किवाड़ की ओट में से देखा क्योंकि एक तो वह बादल को देखने के लिए व्याकुल हो रही थी और दूसरी ओर वह बादलों के देरी से आने के कारण रूठी हुई भी थी।

iii) कवि ने पीपल के पेड़ के लिए किस शब्द का प्रयोग किया है और क्यों?

उ– कवि ने पीपल के पेड़ के लिए 'बूढ़े' शब्द का प्रयोग किया है क्योंकि पीपल का पेड़ दीर्घजीवी होता है। जिस प्रकार गाँव में मेहमान आने पर बड़े-बूढ़े आगे बढ़कर उसका अभिवादन करते है वैसे ही मेघ रूपी दामाद के आने पर गाँव के बुजुर्ग पीपल के पेड़ आगे बढ़कर उनका स्वागत करते हैं।

LESSON-5 : मेघ आए

1. मेघ आए बड़े बन ठन के संवर के,
आगे आगे नाचती गाती बयार चली,
दरवाजे खिड़कियाँ खुलने लगी गली गली,
पाहुन ज्यों आए हो गाँव में शहर के,
मेघ आए बड़े बन ठन के संवर के ।।

(क) मेघ किसके प्रतीक हैं? किस रूप में गाँव में आए हैं? उनका स्वागत किस प्रकार होता है?

उ– यहाँ मेघ ग्रामीण संस्कृति में दामाद के आने पर होने वाली प्रसन्नता को दर्शाते हैं। इस कविता में सांगरूपक अलंकार का प्रयोग किया गया है। इस कविता के माध्यम से कवि ने भीषण गर्मी के पश्चात आसमान में छाए बादलों को देखकर होने वाले उल्लास का वर्णन किया है। मेघ गाँव के किसी घर में आने वाले दामाद के प्रतीक हैं। कृषिप्रधान गाँव में जब लोगों को बादल दिखाई देते हैं तो उनके दिलों में उसी प्रकार का उल्लास भर जाता है जैसे किसी गाँव में शहर से दामाद आता है तो पूरे गाँव में प्रसन्नता की लहर दौड़ जाती है। जिस प्रकार विशेष मेहमान का स्वागत परात में पानी लेकर, पैर धोकर, गले लगाकर, मिलन के आँसू बहा कर करते हैं, उसी प्रकार से आसमान में बादलों को देखकर गाँव में खुशी तथा उल्लास का माहौल बन जाता है।

(ख) यहाँ किस बयार की बात की जा रही है? उसे नाचते हुए, चलते हुए क्यों दिखाया गया है?

उ– यहाँ वर्षा से पूर्व आने वाली ठंडी ठंडी बयार अर्थात् हवा की बात की जा रही है। उसे नाचते गाते हुए, चलते हुए इसलिए दिखाया गया है क्योंकि जिस प्रकार दामाद या मेहमान के आगे नाच गाने का कार्यक्रम किया जाता है, उसी प्रकार पुरवाई अर्थात् पूर्व से ओने वाली शीतल हवा मेघरूपी दामाद के आने की खुशखबरी देकर गाँव में उत्सव का माहौल बना देती है। लोगों के दिलों में उल्लास छा जाता है और वे नाच गाकर इस खुशी को प्रकट करते हैं।

(ग) गली गली के दरवाजे खिड़कियाँ खुलने का क्या कारण है? अपने शब्दों में कवि के भाव स्पष्ट कीजिए।

उ– गली गली के दरवाजे खिड़कियाँ खुलने का मुख्य कारण है कि वर्षा काल से पूर्व अत्यधिक गर्मी का वातावरण होता है और लू से बचने के लिए लोग अपने खिड़की दरवाजे बंद करके रखते हैं। ऐसे में वर्षा के पूर्व चलने वाली ठंडी हवा का झोंका लोगों के दिलों को आनंद से भर देता है। लोग अपने घरों की गर्मी को दूर करने के लिए खिड़कियाँ दरवाजे खोल देते हैं ताकि गर्मी से राहत मिल सके और आने वाले बादलों का स्वागत भी कर सकें।

(घ) पाहुन ज्यों आए हो गाँव में शहर के पंक्ति के भाव सौंदर्य को स्पष्ट कीजिए।

उ– पाहुन ज्यों आए हो गाँव में शहर के पंक्ति में निहित भाव है गाँव के लोगों के हृदय में बसा अतिथि देवो भव का भाव। गाँव के लोग इतने आत्मीय भाव से आगंतुक का स्वागत करते हैं कि वहाँ आने वाले व्यक्ति का मन प्रसन्नता से भर जाता है। गाँव में यदि कोई मेहमान या बहुत दिनों बाद आने वाला कोई अतिथि आता है तो सब प्रसन्न होकर उसका स्वागत करते हैं।

Extra Questions, Lesson-5 (Megh Aaye)

1. धूल किसकी प्रतीक है? वह क्या उठा कर भागी और क्यों? समझा कर लिखिए।

उ– जब बादलों के आने से पूर्व वातावरण में अत्यधिक सूखा होने के कारण मिट्टी धूल का रूप धारण कर लेती है तो हवा के साथ मिली हुई उस धूल के गुब्बार को देखकर ऐसा लगता है जैसे कोई गाँव की युवती किसी अनजाने व्यक्ति को देखकर अपना घाघरा (लहंगा) उठा कर अपने घर की ओर भागी चली जाती हो क्योंकि अनजान तथा अपरिचित लोगों से गाँव की स्त्रियाँ सहज ही बात नहीं करती है।

2. इस कविता का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए ।

उ– प्रस्तुत कविता में कवि ने दिखाया है कि गाँव में दामाद का जो स्थान है वही स्थान वर्षाकालीन बादलों का भी है। उनका भी उसी तरह स्वागत किया जाता है जैसे गाँव के दामाद का क्योंकि गाँव की कृषि पूरी तरह वर्षा ऋतु के बादलों पर ही निर्भर करती है।

3. क्षमा करो गांठ खुल गई भरम की – पंक्ति में किसने किससे क्षमा मांगी और क्यों? समझा कर लिखिए ।

उ– क्षमा करो गांठ खुल गई भरम की पंक्ति में लता रूपी पत्नी ने बादल रूपी पति से क्षमा मांगी है। यह एक प्रतीकात्मक कविता है जिसमें बादल मेहमान का तथा लता उसकी पत्नी का प्रतीक है। लंबे, गर्म और सूखे मौसम से परेशान लता रूपी पत्नी यह सोचने लगी थी कि उसके पति ने उसे भुला दिया है लेकिन जब बिजली

कड़कड़ाकर तथा ठंडी हवा चलाकर बादल रूपी पति ने विश्वास दिलाया कि यह उसका भ्रम था। अब वह आ गया है। तब लता का भ्रम दूट गया और वह अपनी गलतफहमी के लिए क्षमा मांगने लगी।

LESSON-6 : सूर के पद

1. मैया मेरी, चंद्र खिलौना लैहौं ।।
धौरी को पय पान न करिहौं, बेनी सिर न गुथैहौं ।
मोतिन माल न धरिहौं उर पर, झुंगली कंठन लैहौं ।।

(क) कौन किससे क्या लेने की जिद कर रहा है?

उ– प्रस्तुत पद में श्रीकृष्ण की बाल सुलभ क्रियाओं का बहुत ही सुंदर तथा सजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है। बच्चों की आदत होती है कि वह किसी भी चीज को पाने की ज़िद करने लगते हैं। वह इस बात से बिल्कुल अनभिज्ञ होते हैं कि वे जिस चीज को पाने की जिद कर रहे हैं वह उपलब्ध हो भी सकती है या नहीं। यहाँ बालक कृष्ण भी आसमान में चांद देखकर अपनी माता से उसे पाने की जिद कर रहे हैं।

(ख) श्रीकृष्ण अपनी जीत किस प्रकार व्यक्त कर रहे हैं? समझा कर लिखिए।

उ– श्रीकृष्ण अपनी माता से चांद रूपी खिलौना लेने की जिद कर रहे हैं। वह अपनी ज़िद प्रकट करते हुए कहते हैं कि यदि उन्होंने उन्हें आसमान में सफेद सफेद चमकने वाला चांद रूपी खिलौना नहीं दिया तो वह सफेद गाय का दूध नहीं पिएंगे। सिर के बालों की जो शिखा है उसे नहीं गुँथवाएँगे। गले में मोतियों की माला नहीं पहनेंगे तथा अपने गले में झिंगोला भी नहीं डालने देंगे।

(ग) बच्चे की जिद पूरी करने में असमर्थ माँ उसे बहलाने के लिए क्या कहती है? बच्चा क्या उत्तर देता है?

उ– यशोदा माता जब अपने कान्हा को अनोखी जिद करते हुए देखती हैं तो वे उन्हें मनाने के लिए उनके कान में धीरे से कहती है कि वे उनके लिए चांद जैसी दुल्हन लेकर आएंगी। जब श्रीकृष्ण अपनी माँ के मुख से अपनी चांद जैसी दुल्हन की बात सुनते हैं तो वे अपनी माँ की कसम खाकर कहते हैं कि वे तुरंत विवाह करने के लिए तैयार हैं।

Extra Questions, Lesson-6 (Soor Ke Pad)

1. श्रीकृष्ण को मनाने के लिए माँ यशोदा ने क्या किया और क्यों?

उ– श्रीकृष्ण की जिद को देखते हुए माँ यशोदा बड़ी ही चतुराई से उसके कान में कुछ कहती हैं जिससे बलराम ना सुन पाए। वह ऐसा इसलिए करती हैं कि कान्हा को लगे कि वह बलराम की अपेक्षा उनसे ज्यादा प्यार करती हैं।

2. किसके नयन जल से भर जाते हैं और क्यों? स्पष्ट कीजिए

उ– भगवान श्रीकृष्ण के नयन जल से भर जाते हैं। बालक कृष्ण जब खेलते हुए चलते हुए, झुक कर अपने बालों को खींच लेते हैं तो उन्हे पीड़ा होती है। इसके कारण उनकी आँखों में आँसू आ जाते हैं।

3. करी करी सेन बतावे से कवि का क्या तात्पर्य है? समझा कर लिखिए।

उ– माँ को ऐसा लगता है जैसे कृष्ण सो गए हैं। अत: लोरी गाना बंद कर देती है तथा संकेत यानी इशारों से बातें करती है जिससे कान्हा की कच्ची नींद ना टूटे।

1. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

जसोदा हरि पालने झुलावे।
हलरावे, दुलराइ मल्हावे, जोइ-सोइ कुछ गावे।।
मेरे लाल को आउ निंदरिया, काहे न आनि सुवावै।
तू काहैं नहि बेगहि आवै, तोकौ कान्ह बुलावे।।
कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावे।
सोवत जानि मौन ह्वै कै रहि, करि-करि सैन बतावै।।
इहिं अंतर अकुलाइ उठे हरि, जसुमति मधुरै गावै।
जो सुख सूर अमर-मुनि दुरलभ, सो नँदभामिनी पावे।।

i) कौन किसको सुलाने का प्रयास कर रहा है?

उ– प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने माता यशोदा के कृष्ण के प्रति प्यार को प्रदर्शित किया है। यहाँ पर माता यशोदा कृष्ण को सुलाने का प्रयास कर रही है।

ii) यशोदा बालक कृष्ण को सुलाने के लिए क्या-क्या यत्न कर रही है?

उ– यशोदा जी बालक कृष्ण को सुलाने के लिए पालने में झुला रही हैं। कभी प्यार करके पुचकारती हैं और लोरी गाती रहती हैं।

iii) कृष्ण को सोता हुआ जानकर यशोदा क्या करती है?

उ– कृष्ण को सोते समझकर यशोदा माता चुप हो जाती हैं और दूसरी गोपियों को भी संकेत करके समझाती हैं कि वे सब भी चुप रहे।

2. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

खीजत जात माखन खात।
अरुन लोचन, भोंह टेढ़ी, बार-बार जँभात।।
कबहुँ रुनझुन चलत घुटरुन, धूल धूसर गात।
कबहुँ झुक के अलक खँचत, नैन जल भर लात ।।
कबहुँ तुतरे बोल बोलत, कबहुँ बोलत तात।
सूर हरि की निरखि सोभा, निमिष तजत न मात।।

i) इस दोहे में सूरदास जी ने क्या वर्णन किया है?

उ– इस दोहे में सूरदास जी ने श्रीकृष्ण के अनुपम बाल सौन्दर्य का वर्णन किया है।

ii) बाल कृष्ण कैसे चलते हैं?

उ– बाल कृष्ण घुटनों के बल चलते हैं। उनके पैरों में घुंघरुओं की आवाज़ आती है।

iii) बाल कृष्ण के रूप सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

उ– बाल कृष्ण बहुत सुंदर है। उनके नेत्र सुंदर है, भौंहें टेढ़ी हैं तथा वे बार-बार जम्हाई ले रहे हैं। उनका शरीर धूल में सना है।

iv) बाल कृष्ण कैसी जबान में बोलते हैं?

उ– बाल कृष्ण तोतली जबान में बोलते हैं।